घरों के सुधार के लिए चालीस नसीहतें

तालीफ़

शैख़ मुहम्मद सालेह अल् मुनज्जिद हफ़िज़हुल्लाह

तर्जुमा

अब्दूल जब्बार अब्दूल ग़नी अस्सलफ़ी



घरों के सुधार के लिए
चालीस नसीहतें

तालीफ़
शैख़ मुहम्मद सालेह अल् मुन्जिद हफ़ि-ज़हुल्लाह

तर्जुमा
अब्दुल जब्बार अब्दुल ग़नी अस्सलफ़ी

DARUL KUTUB AL ISLAMIA DELHI

दारुल् कुतुबिल् इस्लामिया, दिल्ली

नाम किताब	:	घरों की इस्लाह के लिए चालीस नसीहतें
मोअल्लिफ़	:	मुहम्मद सालेह अल् मुन्जिद
मुतर्जिम	:	अब्दुल जब्बार अब्दुल ग़नी अस्सलफ़ी
नाशिर	:	दारुल कुतुबिल् इस्लामिया, दिल्ली-6
सन् इशाअ़त	:	2014
तादाद	:	1100
क़ीमत	:	50.00/-
मतबअ़	:	भारत आफ़सेट, दिल्ली-6

मिलने के पते

☆ **दारुल कुतूबिल् इस्लामिया**
उर्दू मार्किट, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6
फोन : 011:23269123,
E-mail: darulkutub@hotmail.com

सऊदी अ़रब में राब्ते का पता

☆ **मुहम्मद आक़िल**
पोस्ट बॉक्स नं. 8928, जद्दा, सऊदी अ़रब
फोन : 00966:504886317,
E-mail: mohammedaqil@hotmail.com

फेहरिस्त मज़ामीन

बिस्मिल्लाह हिर्रहमा निर्रहीम

अर्ज़े नाशिर

نحمده ونصلی علی رسوله الکریم وبعد!

इंसानी ज़िंदगी में घर की बड़ी एहमियत है। घर इंसान के लिए महफ़ूज़ मुक़ाम और बेहतरीन पनाह गाह है। घर में इंसान को सुकून व आराम मिलता है। वह अपने एहल व अयाल (बीवी-बच्चों) के साथ ज़िंदगी बसर करता है अल्लाह तआला ने बतौर एहसान इर्शाद फ़रमाया:

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا (سورہ نحل آیت: ٨٠)

अल्लाह ने तुम्हारे लिए घरों को सुकून की जगह बनाया।

लेकिन जब आज हम अपने मआशरे (समाज) पर नज़र डालते हैं तो हमारे अकसर घर फ़ितनों की आमाजगाह (अड्डा) बने हुए हैं, घर-घर में झगड़े हैं, कहीं बाप बेटे के दर्मियान इख़्तिलाफ़ है, कहीं भाईयों में झगड़े हैं, कहीं बीवी और शोहर में निभाव नहीं होता, कहीं सास बहू में और शोहर में ताल मेल नहीं और जो ख़ान्दान एक साथ रहते हैं वहाँ मामूली बातों पर तकरार होती हैं अन्त में बात मर्दों तक पहुंचती है और नोबत ख़ून ख़राबे और थाना पुलिस तक जा पहुंचती है।

यह सब इसलिए है कि छोटे बड़ों का अदब नहीं करते, बड़े छोटों पर शफ़क़्क़त व रहम नहीं करते। एक दूसरे के साथ ख़ैर ख़्वाही और भाई-चारा का जज़्बा ख़त्मः हो चुका है। हर एक अपने मफ़ाद की बात करता है।

आज हमारे घरों में बे पर्दगी आम है जिसकी वजह से बहन बेटियों की इज़्ज़त खुद अपने घरों में महफ़ूज़ नहीं। बच्चे अपने ही घरों से बेहयाई और बेदीनी की तालीम हासिल कर रहे हैं।

इन हालात में घर के बड़ों को अपनी ज़िम्मेदारी महसूस करनी चाहिए। कल क़यामत के दिन घर का बड़ा ही अपने घर की तरफ़ से

जवाबदेह होगा।

यह किताब घरों की इस्लाह के लिए चालीस नसीहतें शैख़ मोहम्मद बिन सालेह अल् मुनज्जिद हफ़िज़हुल्लाह की अ़रबी तालीफ़ ''40 नसीहतुन लिइस्लाहिल् बुयूति'' का उर्दू तर्जुमा है जो शैख़ अब्दुल जब्बार अब्दुल ग़नी के क़लम से है। यह चालीस नसीहतें किताब व सुन्नत की रोशनी में घरों की इस्लाह के लिए बुनियाद की हैसियत रखती हैं।

दारुल् कुतुबिल् इस्लामिया दिल्ली ने निहायत उमदा कम्प्यूटर कम्पोज़िंग, आफ़सेट की छपाई और बेहतरीन काग़ज़ व टाईटिल के साथ इस किताब को आपकी ख़िदमत में पेश करने की सआ़दत हासिल की है। हमें उम्मीद है कि यह किताब घरों की हक़ीक़ी इस्लाह के लिए मुआ़विन व मददगार साबित होगी। इन्शाअल्लाह।

एहले ख़ैर अधिक तादाद में ख़रीद कर तक़सीम करें तो यह एक बेहतरीन काम के साथ-साथ दावत व तब्लीग़ के फ़र्ज़ की अदायगी भी होगी।

पढ़ने वालों से गुज़ारिश है इस किताब को पढ़ कर हमें अपनी राए से ज़रूर नवाज़ें ताकि आइन्दा आपकी राए से फ़ाइदा हासिल किया जा सके।

दुआ़ है कि अल्लाह रब्बुल आ़लमीन इस किताब को हमारे घरों की इस्लाह का साधन बनाए। (आमीन)

शकील अहमद मेरठी
दारुल कुतुबिल् इस्लामिया
दिल्ली

बिस्मिल्लाह हिर्रहमा निर्रहीम

मिसाली-घर

نحمده ونصلی علی رسوله الکریم وبعد!

अल्लाह तआ़ला ने इंसानों को बहुत सी नेमतों से माला माल किया है। जिस्मानी नेमतों में आँख, नाक, कान, ज़बान, चहरा, हाथ, पाँव और पूरा जिस्मानी निज़ाम एक नेमत है मगर इंसानी ख़्यालात और तफ़क्कुरात (सोच) इससे भी बढ़ कर नेमत है जो उसे सहीह राह पर गामज़न करते हैं।

लिहाज़ा हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि वह अल्लाह की तमाम नेमतों का शुक्र अदा करे और अल्लाह तबारक वतआ़ला की मर्ज़ी के मुताबिक़ अपनी ज़िंदगी गुज़ारे। ज़िंदगी गुज़ारने के लिए उसे अम्न व अमान का गहवारा चाहिए और अल्लाह तआ़ला ने इसलिए घर जैसी नेमत दी। अगर घर किसी से छिन जाए तो इसकी बेकसी और मजबूरी और बाल-बच्चों के साथ रहने वाली नेमत छिन जाती है, दर-दर की ठोकरें खाता है, कभी यहाँ रहता है और कभी वहाँ। अपने बाल-बच्चों की सही तरबियत नहीं कर पाता और न ही औलाद के लिए बेहतर इन्तिज़ाम कर पाता है वह अपने ख़ान्दान को एक मिसाली ख़ान्दान नहीं बना सकता और न अपने घर को मिसाली घर। लिहाज़ा जिसे यह दौलत नसीब हो उसे अपने घर को मिसाली घर बनाने की ज़रूरत है। घर को गुनाहों की आमाजगाह बनाने के बजाए अल्लाह की मना की हुई चीज़ों से बचाने की ज़रूरत है इस घर में जब वह दाख़िल हो तो कुरआन की तिलावत से कान आशना हों, शरीअत और नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सुन्नत के मुताबिक़ घर की ज़िंदगी हो इल्म और नफ़ा बख़्श और हिक्मत की बातों से घर भरा हुआ हो, बच्चों और बीवी के बुलंद अख़लाक़ से वह मालामाल हो, गर्ज़ यह जैसे ही वह घर में दाख़िल हो अम्न व सुकून उसे नसीब

हो। उसका घर गाने, बजाने और फ़हश (बेहयाई) व गुनाह वाली बातों और फ़िल्मों वीडियो और नाच गानों के तज़किरों से पाक हो, उसकी बीवी निहायत ही इताअत गुज़ार, ग़ौज़ी, रोज़े व नमाज़ और तिलावत कुरआन की करने वाली, सदक़ा व ख़ैरात करने वाली, सुबह व शाम ज़िक्र व अज़कार में रहने वाली, बुराईयों से बचने वाली, बाल बच्चों की निगहदाश्त और देख-भाल करने वाली, अपने शोहर से मुहब्बत से पेश आने वाली, शगुफ़ता दहन व शगुफ़ता कलाम हो, बापर्दा रहने वाली और बाहर निकलने वाली न हो, ग़र्ज़कि किसी भी शख़्स को एक मिसाली घर की ज़रूरत है यह किताब शैख़ मो० सालेह अल् मुनज्जिद की महनत का नतीजा है, अगर घरों की इस्लाह के लिए इन 40 नसीहतों से कोई फ़ायदा उठाए तो वह अपने घर को एक मिसाली घर बना सकता है। शैख़ मो० सालेह अल् मुनज्जिद सऊदी अरब के मारूफ़ (जाने-माने) आलिमे दीन हैं और उनकी तालीफ़ात से आज कुरआन व सुन्नत के शैदाई पूरी दुनिया में मुस्तफ़ीद हो रहे हैं। इस किताब की मक़बूलियत और इफ़ादियत को सामने रखते हुए इसके तर्जुमा पर काम शुरू किया है। मेरी ज़ाती राए यह है कि यह किताब घरों की इस्लाह के लिए संग माल साबित हो सकती है बशर्ते कि घर का हर फ़र्द सच्चे दिल से इसका मुताला करे। घर और समाज की इस्लाह खुद बखुद वजूद में आती चली जाएगी।

अब्दुल जब्बार अब्दुल ग़नी अस्सलफ़ी

मुक़द्दमा

ان الحمد لله، نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور انفسنا، ومن سيئات اعمالنا من يهده الله فلا مضل له ومن يضلل فلا هادي له، واشهد ان لاالٰه الاالله وحده لاشريک له، واشهد ان محمدا عبده ورسوله. اما بعد:

हक़ीक़त यह है कि हर क़िस्म की हम्द व सना अल्लाह ही के लिए है हम उसी की हम्द करते हैं और उस ही से मदद चाहते हैं और उसी से ही अस्तग़फ़ार भी करते हैं। हम अल्लाह की पनाह में अपने नुफ़ूस के शर और अपने बुरे आमाल के शर से आते हैं। अल्लाह तआ़ला जिसे हिदायत दे दे उसे कोई गुमराह करने वाला नहीं है और वह जिसे गुम्हराह कर दे उसे कोई रास्ता दिखाने वाला नहीं है और मैं इस बात की गवाही देता हूँ कि अल्लाह तआ़ला का कोई शरीक व साझी नहीं है और इस बात की भी गवाही देता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं। अम्मा बाद!

घर एक नेमत है

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया:

والله جعل لكم من بيوتكم سكناً (النحل آية: ٨٠)

और अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे लिए तुम्हारे घरों को बाइस इतमीनान का स्थान बनाया है।

इब्ने कसीर रह० ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने अपने बंदों पर जो-जो नेमतें की हैं वह उनका तज़किरा करता है कि अल्लाह तआ़ला ने उनके लिए घरों को ऐसी सुकून और इतमीनान की जगह बना दिया हौ जिसमें आकर वह बसेरा करते हैं, इसमें आकर वह पनाह गुज़ीं हो जाते और घर से हर वह नफ़ा हासिल करते हैं जो अल्लाह तआ़ला ने उनके लिए इसमें पोशीदा कर दिया है (तफ़्सीर इब्ने कसीर: 509/4)

हमारे लिए घर की मिसाल क्यों पेश की गई? क्या वह एक ऐसी जगह नहीं है जहाँ इंसान खाता है पीता है, सोता है, आराम करता है और ज़रूरत बशरी पूरी करता है? क्या वह मकान उसके लिए एक ऐसा मुक़ाम नहीं है जिसमें वह अपनी तन्हाई इख़्तियार करता है और अपने बाल-बच्चों के साथ सामाजी ज़िंदगी गुज़ारता है? क्या घर एक ऐसी जगह नहीं है जिसमें औरत की हिफ़ाज़त होती है और पूरे पर्दे के साथ वह इसमें रहती है। इसी लिए तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है:

وقرن في بيوتكن ولاتبرجن تبرج الجاهلية الاولىٰ (سورة الاحزاب آية: ٣٣)

और वह औरतें अपने घरों में ठहरें और पहली जाहिलियत की तरह ज़ेब व ज़ीनत (बनाव-सिंगार) न इख़्तियार करें।

जब आप बेघर लोगों के हालात पर गौ़र व फ़िक्र करेंगे जिनके पास आराम व सुकून हासिल करने के ठिकाने नहीं हैं या उन लोगों की ज़िंदगियों पर नज़र डालेंगे जो सड़कों पर ज़िंदगी बसर कर रहे हैं या उन लोगों की जो कि वक़्ती (अस्थाई) तोर पर बनाए गए ख़ेमों में पनाह लिये हुवे हैं तो आपको घर की एहमियत और घर कितनी बड़ी अज़ीम नेमत है इसका अंदाज़ा हो जाएगा। आपने अक्सर किसी परेशान हाल शख़्स को कहते सुना होगा कि वह यह कह रहा है कि मेरा कोई घर और मकान नहीं है मैं किस क़द्र परेशान हाल रहता हूँ, कभी होटलों में, कभी चाए ख़ानों में, कभी इसके मकान में तो कभी उसके

मकान में, कभी बाग़ों में, कभी समंदर के किनारे पर सोता हूँ, मेरे कपड़े लत्ते मेरी कार में या किसी दरख़्त के नीचे पड़े रहते हैं तो उस वक़्त आपको यक़ीनन घर जैसी अज़ीम नेमत की अहमियत का एहसास होता होगा और आप घरों से महरूम लोगों को देख कर परेशान होकर यह सोचने पर मजबूर होते होंगे कि घर वाक़ई एहमियत का हामिल है और घर को वाक़ई अल्लाह तआ़ला ने सुकून व राहत बख़्श बनाया है।

और जब अल्लाह तआ़ला ने यहूद के क़बीला बनू नज़ीर से इंतिक़ाम लिया तो उनसे इसी नेमत को छीन लिया और उनको उनके घर-बार से निकाल बाहर किया इसी लिए अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

هو الذی أخرج الذین کفروا من اهل الکتاب من دیارهم لاول الحشر (سوره حشر آیت:۲)

और अल्लाह ही की ज़ात वह है जिसने एहले-किताब में से काफ़िरों को उनके घरों से निकाल बाहर किया यह उनके लिए पहला हश्र था।

इसके बाद ही फ़रमाया है:

يخربون بيوتهم بايديهم وايدى المؤمنين فاعتبروا يا اولى الابصار" (سوره الحشر آية:۲)

तर्जुमा: ''वह अपने ही हाथों से अपने घरों को और मोमिनीन के हाथों से बर्बाद कर रहे थे इसलिए ऐ बसीरत की निगाह रखने वालो! इबरत व नसीहत हासिल करो।''

चंद काम ऐसे हैं जिनको इख़्तियार करके एक मुसलमान फ़र्द अपने घर की इस्लाह कर सकता है:

पहला काम यह है कि वह घर अपने और अपने घर वालों को जहन्नम की आग में गिरने से बचा सकता है और जलने के अज़ाब से महफ़ूज़ रह सकता है:

يا ايها الذين آمنوا قوا انفسكم وأهليكم نارا وقودها الناس والحجارة عليها ملائكة غلاظ شداد لايعصون الله ما امرهم ويفعلون مايؤمرون (سورة التحريم: ٦)

''ऐ ईमान वालो अपने आपको और अपने घर वालों को जहन्नम की आग से कहफ़ूज़ कर लो जिस का ईंधन लोग और पत्थर हैं इस पर निहायत ही सख़्त दिल फ़रिश्ते मुक़र्रर किए गए हैं जो

अल्लाह की किसी भी मामला में जिसका उसने उन्हें हुक्म दिया है नाफ़रमानी नहीं करते हैं और वह वही करते हैं जिसका उन्हें हुक्म दिया जाता है।''

दूसरी बात यह है कि जो भी घर का ज़िम्मेदार है अल्लाह के सामने उस दिन जबकि हिसाब व किताब होगा उसको पेश होकर अपनी घरेलू ज़िम्मेदारी का पूरा पूरा हिसाब देना है जैसा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है:

ان اللـه تعالٰی سائل کل راع عما استرعاه أحفظ ذلک أم ضیعه حتی یسأل الرجل عن اهل بیته (حسن رواه النسائی فی عشرة السناء: ۲۹۲ وابن حبان عن انس)

''बेशक अल्लाह तआ़ला घर के ज़िम्मेदार से सवाल करने वाला है कि उसने उसकी किस तरह हिफ़ाज़त की। आया उसने हिफ़ाज़त की या उसे तबाह व बर्बाद कर दिया।'' हत्ता कि आदमी से उसके घर वालों के सिलसिला में भी सवाल किया जाएगा।

तीसरी बात यह है कि मकान हिफ़ाज़ते-नफ़्स की बेहतरीन जगह है, बुराईयों और फ़ितनों से महफ़ूज़ रहने का मुक़ाम है और लोगों को अपने तक रोकने की महफ़ूज़ जगह, और हक़ीक़ी ऐसी सच्ची और जाइज़ पनाह गाह है जहाँ वह फ़ितना व आज़माईश के समय पनाह ले सके। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

طوبی لمن ملک لسانه و وسعه بیته وبکی علٰی خطیئته (حسن رواه الطبرانی فی الاوسط، وصحیح الجامع: ۳۸۲۴)

''ऐसे शख़्स के लिए खुशख़बरी है जिसने अपनी ज़बान पर क़ाबू पा लिया और अपने घर ही में कुशादगी इख़्तियार की और अपने गुनाहों पर रोया।''

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

خمس من فعل واحدة منهن کان ضامناً علی الله، من عاد مریضاً أو خرج غازیاً أو دخل علی امامه یرید تعزیره و توقیره أوقعد فی بیته فسلم الناس منه وسلم من الناس (رواه احمد: ۵/ ۲۴۱)

''जो शख़्स पाँच अमलों में से कोई एक भी अमल करता है तो अल्लाह तआ़ला उसका ज़ामिन हो जाता है। जिसने किसी मरीज़ की अयादत की, या ग़ाज़ी बन कर निकला, या वह अपने इमाम के

पास गया और उसका मक़सद यह है वह उसे नसीहत करे या इज़्ज़त करे या वह अपने घर में बैठा रहा कि लोग उससे महफ़ूज़ हो गए और वह लोगों से मेहफ़ूज़ हो गया (तो अल्लाह तआला उसका ज़ामिन हो जाता है।)

और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इंसान की सलामती यह है कि वह फ़ितना के वक़्त अपने घर को लाज़िम पकड़े।

احسن، رواہ الدیلمی فی مسند الفردوس عن ابی موسی وھو فی صحیح الجامع: ۳۵۴۳)

एक मुसलमान उस वक़्त उन तमाम उमूर से फ़ायदा उठा सकता है जबकि बुराइयाँ बहुत फैल चुकी हों और वह उनको मिटाने व ख़त्म करने की ताक़त न रखता हो, बुराईयाँ आम हो चुकी हों, हराम काम किए जा रहे हों, तो उस वक़्त घर उसकी पनाहगाह होगी क्योंकि वह न हराम काम में मुलव्विस होगा और न हराम चीज़ों पर उसकी नज़र पड़ेगी। वह अपने ख़ान्दान और बीवी बच्चों की भी हिफ़ाज़त कर सकता है उनको बे परदगी और फ़ैशन से महफ़ूज़ रख सकता है और बुरी सोहबत और बुरे साथियों से भी बचा सकता है।

चौथी सूरत यह है कि अक्सर अफ़राद का ज़्यादा तर वक़्त घरों में जबकि सख़्त सर्दी हो या गर्मी हो, सख़्त बारिश हो, या दिन का इब्तिदाई हिस्सा हो या आख़री हिस्सा हो या वह काम धाम से, तालीम गाहों से, मदरसों और आफ़िसों से लौटता है तो अक्सर वक़्त घर में ही गुज़ारता है। इस बात का ख़्याल रहे कि उसका यह क़ीमती घर उस वक़्त अल्लाह की इताअ़त व फ़रमांबरदारी का नमूना नज़र आए उसके औक़ात ज़ाए व बर्बाद न हों और वह नाजाइज़ कामों में न पड़ गया हो, वीडियो फ़िल्में और डिश ऐंटीनों और म्यूज़िक के प्रोग्रामों से उसका घर भरा हुआ न हो बल्कि अल्लाह का फ़रमांबर्दार बन कर रहे।

पाँचवीं बात जो बड़ी एहम है वह यह है कि एक मुस्लिम मर्द के लिए घर की बड़ी एहमियत है क्योंकि वह मुस्लिम मआशरा (समाज) बनाने में बड़ा किरदार अदा करता है क्योंकि घरों में बच्चियाँ, लड़कियाँ होती हैं और वह बज़ाते खुद एक मोहल्ला और क़बीला की हैसियत रखती हैं। क्योंकि अगर एक बच्ची भी सालेह हो

गई और उसकी तरबियत इस्लामी ढन्ग पर हो गई तो वह मआशरा को तक़वियत पहुंचाने का सबब होगी, अल्लाह के अहकामात पर अमल करके अल्लाह के दुश्मनों का मुक़ाबला करने वाली होगी, लादीनियत की, आंधियों का रुख़ मोड़ने वाली और अपनी एक नस्ल को सीधे रास्ता पर रखने वाली होगी वह मआशरा का एक ताक़तवर अन्ग बन कर नमूदार होगी। ख़ैर की रखवाली और उसको फैलाने वाली और बुराइयों का क़िला क़मा करने वाली होगी, घरेलू फ़ितनों का रास्ता बन्द करने वाली और बे राह लोगों को रास्ता दिखाने वाली और दीन से दूर शौहर को इल्म व आगही के रास्ता पर लाने वाली होगी, वह तक़वा का मुजस्समा और बाहया ख़ातून होगी उसकी गोद का पलने वाला हर नौ निहाल इस्लाम का नुमाइन्दा व कारिंदा होगा, वह मुसलमान घर से निकल कर मआशरा का सालेह रुक्न होगा जो ख़ुद भी दाई होगा और दूसरों के लिए नमूना व उसवा होगा, उसकी गोद का पलने वाला बच्चा या बच्ची मुजाहिद, तालिबे इल्म और नेक व सालेह बीवी, बेहतरीन मुरब्बी, माँ और दूसरों की इस्लाह करने वाला/वाली एक फ़र्द होगा/होगी। इस एतबार से घरों की एहमियत उस वक़्त और बढ़ जाती है जबकि बुराइयाँ ज़्यादा हो और इस सिलसिला में बड़ी कोताही हो रही हो ऐसे वक़्त में एक सवाल बार-बार उभर कर सामने आता है कि वह वसाईल (सूत्र और साधन) कौन से हैं जिनके ज़रिया घरों की इस्लाह की जा सके?

ऐ इस किताब के पढ़ने वाले भाई यह रिसाला इसी सवाल का जवाब है अल्लाह तआ़ला इससे फ़ायदा पहुंचाए और अबनाए इस्लामी की तवज्जह का मर्कज़ मुस्लिम मआशरा को क़ायम करना हो और इस इस्लाही पैग़ाम को घर-घर पहुंचाया जाए ताकि एक पाक व साफ़ मुस्लिम मआशरा ज़ाहिर हो सके।

और यह नसीहतें दो उमूर पर हैं:

मसलेहतों को हासिल किया जाए जो मारूफ़ व भलाई के क़याम में मददगार हों और बुराइयों को मिट सकें।

घर का बनाना

नसीहत नं. 1

नेक बीवी का इंतिख़ाब

अल्लाह तआला का इर्शाद है:

وانكحوا الايامٰى منكم والصالحين من عبادكم وامائكم ان يكونوا فقراء يغنهم الله من فضله والله واسع عليم (سورة نور: ٣٢)

"और तुम में से जो ग़ैर शादी शुदा लड़कियाँ हों और तुम्हारे गुलामों और लौंडियों में से जो नेक व सालेह हों उनकी तुम शादी कर दो, अगर वह फ़क़ीर व मुहताज हैं तो क्या हुआ अल्लाह उनको अपने फ़ज़्ल से मालदार बना देगा और अल्लाह बड़ी कुशादगी वाला जानने वाला है।"

☆ साहब ख़ाना के लिए ज़रूरी है कि नेक व सालेह बीवी का मंदरजा ज़ैल शराइत को मद्दे नज़र रखते हुए इंतिख़ाब करे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

١. تنكح المرأة لاربع: لمالها ولحسبها ولجمالها ولدينها فاظفر بذات الدين تربت يداك (بخارى، فتح البارى ٩/١٣٢. متفق عليه)

औरत से निकाह चार चीज़ों की वजह से किया जाता है उसके माल, उसके हस्ब और उसकी ख़ूबसूरती और उसके दीन की वजह से। तुम दीन वाली औरत के साथ कामयाब हो गए। तुम्हारे हाथ ख़ाक आलूद हों। (यानी अगर किसी और दूसरे मक़सद से तुम ने शादी की)

☆ الدنيا كلها متاع وخير متاع الدنيا المرأة الصالحة (مسلم ١٣٦٨، نسائى جامع الصحيح ٣٤٠٧)

तमाम दुनिया अस्बाब व मताअ़ और सामान है और दुनिया की बेहतरीन मताअ़ नेक बीवी है।

☆ ليتخذ أحدكم قلباً شاكراً ولسانا ذاكراً وزوجة مومنة تعينه على أمر الآخرة

(رواه احمد: ۲۸۲ والترمذی)

तुम में से हर एक को शुक्र गुज़ार दिल और ज़िक्र करने वाली ज़बान और नेक बीवी का इन्तिख़ाब करना चाहिए जो आख़िरत के मामलात में तुम्हारी मदद करे।

और एक रिवायत में है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

زوجة صالحة تعينك على أمر دنياك ودينك خير ما اكتنز الناس (صحيح الجامع ۴۳۸۵)

नेक बीवी जो तुम्हारी तुम्हारे दीन व दुनिया के मामले में मदद करे वह इन तमाम ख़ज़ानों से बेहतर है जो लोग जमा करते हैं।

☆ "تزوجوا الودود الولود انی مکاثر بکم الانبیاء یوم القیامة" (رواه احمد: ۲۴۵/۳ صحیح فی ارواء الغلیل ۱۹۵/۶)

बहुत ज़्यादा मुहब्बत करने वाली, बच्चों को पैदा करने वाली लड़की से शादी करो इस लिए कि मैं क़यामत के दिन तुम्हारी वजह से अंबिया पर फ़ख़्र करूंगा।

☆ عليكم بالابكار فانهن انتق ارحاما واعذب افواهاً وارضى باليسير (وفی رواية اقل خباء اً) (رواه ابن ماجه)

तुम पर लाज़िम है कि कुंवारी लड़कियों से शादी करो इसलिए कि वह साफ़ सुथरे रहम वाली और शीरीं लब वाली और जल्द राज़ी हो जाने वाली होती हैं और एक रिवायत में है कि बहुत कम धोखा देने वाली होती हैं।

☆ चार औरतें जिन से शादी होती है उनमें नेक व सालेह औरत सआ़दत व नेक बख़्ती है इसी तरह चार बुरी औरतों में से एक औरत बहुत बदबख़्त हुआ करती है जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया है:

قال رسول الله ﷺ فمن السعادة: المرأة الصالحة تراها فتعجبك وتغيب عنها فتأمنها على نفسها ومالك، ومن الشقاء: المرأة تراها فتسوؤك وتحمل لسانها عليك وان غبت عنها لم تأمنها على نفسها ومالك (ابن حبان فی سلسلة الصحيحة رقم: ۲۸۲)

सआदत में से यह है कि एक नेक औरत ऐसी है कि जब तुम उसको देखो तो वह तुम को भली लगे और जब तुम उससे दूर हो तो वह अपने नफ़्स और तुम्हारे माल की हिफ़ाज़त करे। और बदबख़्त

औरत वह है कि जब तुम उसको देखो तो वह तुम को बुरी लगे, और अपनी ज़बान तुम पर चलाती रहे और अगर तुम उससे ग़ायब रहो तो वह अपने नफ़्स और तुम्हारे माल की हिफ़ाज़त न करे।

☆ जब औरत को ढूंडने के सिलसिले में यह हुक्म है तो मर्द जब पैग़ाम दे और किसी मुस्लिमा औरत के मुक़ाबिल में वह आए तो उसमें भी इन शर्तों को देखना चाहिए कि मोमिना और नेक बच्ची की ज़िंदगी अच्छी तरह बसर हो।

٨. اذا أتاكم من ترضون خلقه ودينه فزوجوه الاتفعلوا تكن فتنة فى الارض وفساد عريض (ابن ماجه:١٠٧٧)

जब तुम्हारे पास कोई ऐसा शख़्स आए जिसके दीन और अख़लाक़ से तुम राज़ी हो तो तुम उसकी शादी कर दो वर्ना तुम ज़मीन में ज़बर्दस्त फ़साद बरपा करने वाले बनोगे।

ऊपर लिखी मालूमात के पेश नज़र ज़रूरी हो जाता है कि जब हम किसी लड़की के मुतअल्लिक़ सवाल करें तो सवाल करने में मुतानत संजीदगी और हुस्न व भलाई का पहलू हो और तमाम बावसूक़ ज़राए से मालूमात भी फ़राहम की जा चुकी हो और सही और सच्ची ख़बरों का भी इल्म हो ताकि घर न बिगड़े। यहाँ एक पहलू पर और भी ग़ौर व ख़ौज़ होना चाहिए कि ख़्वाह लड़की हो या लड़का उसके अक़ीदा के मुतअल्लिक़ जानकारी भी लेनी चाहिए कि वह मोमिना सालेह और अल्लाह परस्त है या नहीं? आया मुश्रिकाना अक़ाइद की हामिल तो नहीं है और लड़के में भी यही ख़ूबी देखनी चाहिए है क्योंकि नेक मर्द जब होगा तो वह भी नेक व सालेह लड़की के साथ उमदा और सालेह घर बनाने में मददगार होगा इसलिए कि उमदा बीज से अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की इजाज़त से उमदा पौधे ही निकलेंगे और जिसमें सरासर ख़बासत होगी उससे सिवाए ख़बासत के कुछ और हासिल न होगा।

नसीहत नं. 2
औरत की इस्लाह में कोशिश करना

अगर अल्लाह तआला ने नेक बीवी अता कर दी है तो वह अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से नेमत ही नेमत है और अगर इसके ख़िलाफ़ है तो फिर भी इस सूरत में उसकी इस्लाह करने की कोशिश करनी चाहिए और मुख़्तलिफ़ औक़ात में उससे बात चीत-करते रहना चाहिए।

क्योंकि आदमी जब किसी ग़ैर दीनदार लड़की से शादी करता है तो उसके नज़दीक दीनदारी की कोई एहमियत नहीं होती और वह अपने मामलात में उस मोज़ू पर ग़ौर व फ़िक्र ही नहीं करता या उसने इस उम्मीद पर उससे शादी कर ली हो कि वह उसकी इस्लाह करेगा या रिशतेदारों के दबाव से शादी कर ली है तो फिर ज़रूरी हो जाता है कि वह उसके लिए इस्लाही पहलू भी इख़्तियार करे और फ़लाह और हिदायत की कोशिश करता रहे और यह जान ले कि हिदायत अल्लाह की जानिब से है और अल्लाह तआला ही सहीह इस्लाह करने वाला है जैसा कि अल्लाह तआला का एहसान अपने बंदे ज़करिया पर हुआ था "واصلحنا له زوجه" कि हमने उसके लिए उसकी बीवी को नेक व सालेह बना दिया था। ख़्वाह दीनी इस्लाह हो या दुनियावी इस्लाह हो। इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया कि ज़करिय्या अलैहिस्सलाम की बीवी बांझ थीं उनके बच्चे पैदा नहीं हो सकते थे तो अल्लाह तआला ने इस लायक़ बना दिया कि वह बच्चा जन सकें।

और इमाम अता ने इस आयत की तफ़्सीर करते हुए कहा कि वह ज़बान दराज़ थीं तो अल्लाह तआला ने उनकी इस्लाह फ़रमा दी। (इब्ने कसीर: 364 5)

बीवी के सुधार के लिए जो तरीक़े इख़्तियार किए जाएें:

1. उसको यह तवज्जह दिलाई जाए कि वह अल्लाह की बंदी है और उसको सिर्फ़ उसी की इबादत भी करनी है यह कई तरह से हो सकती है इसकी तफ़्सील आईंदा आएगी।
2. उसके ईमान को मिसाली ईमान बनाने की कोशिश करते रहना

चाहिए मसलन:

1. औरत को क़यामुल् लैल और तहज्जुद की नमाज़ पर उभारते रहना।
2. अल्लाह के कलाम की तिलावत की रग़बत दिलाना।
3. दुआओं और ज़िक्र व अज़कार की तरग़ीब दिलाना और याद कराना कि उनको मुनासिब औक़ात में पढ़ती रहे।
4. उसको सच्चाई पर बराबर उभारते रहना।
5. नफ़ा बख़्श इस्लामी कुतुब के मुताला का शोक़ दिलाना।
6. मुफ़ीद इस्लामी कैसेट सुनाना और ऐसी कैसेट जिससे ईमानी कुव्वत में इज़ाफ़ा और बढ़ावा होता रहे। (1)
7. नेक व सालेह औरतों से मिलाना और उनका हम असर बनाना और उनसे उमदा बातों का तबादला-ए-ख़्याल करवाते रहना और कभी कभी उनकी ज़ियारत के लिए ले जाना।
8. शर व बुराई से हमेशा दूर रखना और उसके जिस क़द्र भी दरवाज़े हैं उनको बंद कर देना बुरी सहैलियों ओर साथियों और बुरी जगहों से बचाते रहना।

नसीहत नम्बर 3

घर में ईमानयात का होना

घर को अल्लाह के ज़िक्र का मुक़ाम बना लीजिए।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

مثل البيت الذى يذكر الله فيه، والبيت الذى لايذكر فيه مثل الحى والميت (مسلم : ٥٣٩)

उस घर की मिसाल जिसमें अल्लाह का ज़िक्र होता है और उस घर की मिसाल जिसमें अल्लाह का ज़िक्र नहीं होता ज़िंदा और मुर्दा की तरह है।

ज़रूरी है कि घर को अल्लाह के ज़िक्र की जगह बना लिया जाए ख़्वाह वह ज़िक्र दिल से हो रहा हो या ज़बान से या नमाज़ें पढ़ी जा रही हों या क़ुरआन करीम की तिलावत हो रही हो या इल्मी मुज़ाकिरा हो रहा हो या दीनी व शरई किताबों को पढ़ा जा रहा हो।

आज अक्सर मुसलमानों के घर ऐसे मिलते हैं जो अल्लाह का ज़िक्र न होने की वजह से मुर्दा ख़ाना मालूम होते हैं जैसा कि हदीस शरीफ़ से मालूम होता है कि वह घर जहाँ अल्लाह का ज़िक्र न हो उसकी मिसाल मुर्दा जैसी है बल्कि उन घरों का हाल यह है कि उनसे शैतान की रागें और फ़िल्मी गाने और म्यूज़िक की आवाज़ें निकलती हुई सुनाई देती हैं और बहुत से घर ग़ीबत, चुग़ली, बुहतान इल्ज़ाम तराशी का नमूना नज़र आते हैं।

उनकी हालत ऐसी है कि बुराइयों और नापसंदीदा उमूर से वह भरे हुए हैं, महरम व ग़ैर महरम पड़ोसियों का मेल जोल बढ़ा हुआ है, फैशन उरूज पर है, ग़ैर महरम पड़ोसियों के सामने घर की माऐं और बहने बेपर्दा आ जा रही हैं, वह घरों में बिला झिझक दाख़िल होते हैं, औरतें सर खोले घूमती हैं तो फिर कैसे इस घर में फ़रिश्ते दाख़िल हो सकते हैं? इसलिए मुसलमानों तुम अपने घरों को ज़िंदा घर बनाओ और उनमें अल्लाह के ज़िक्र से जान डाल दो और हर वह बुरा अमल घर से निकाल फैंको जिससे अल्लाह की रहमत दूर होती है।

नसीहत नं. 4

अपने घरों को इबादत ख़ाना बना लो

मक़सद यह है कि अपने-अपने घरों को इबादत और अल्लाह से मांगने की जगह बना लिया जाए जैसा कि अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है:

واوحينـا الٰى موسٰى وأخيه ان تبوء القومكما بمصر بيوتا واجعلوا
بيوتكم قبلة واقيموا الصلاة وبشر المومنين (يونس: ٨٧)

और हम ने मूसा और उनके भाई (हारून) को इस बात की वही की कि तुम दोनों अपनी क़ौम के लिए मिस्र को घर बना लो और अपने घरों को क़िब्ला भी बना लो और नमाज़ को क़ायम करो और मोमिनीन के लिए बशारत है।

इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें घरों को मस्जिद बनाने का हुक्म दिया था। इब्ने कसीर ने यह भी फ़रमाया कि यह भी मुराद हो सकती है। वल्लाहु आलम

यानी जब मूसा अ़लै० और उनकी क़ौम फ़िरऔन की वजह से मुसीबत और आज़माईश में मुबतिला हुई, उनकी ज़िंदगी उन पर तंग हो गई, उठना बैठना और घूमना फिरना दुश्वार हो गया तो उन्हें कसरत से नमाज़ का हुक्म दिया गया कि वह घर में मुक़ीम होकर ज़्यादा से ज़्यादा नमाज़ें अदा करें जैसा कि फ़रमाया:

يا ايها الذين آمنوا استعينوا بالصبر والصلوٰة (سورة بقره: ١٥٣)

ऐ इमन वालो! सब्र और नमाज़ के ज़रिआ मदद चाहो।

और हदीस शरीफ़ में है:

كان رسول الله ﷺ اذا حزبه امر صلي (٢٢٣/٤ تفسير ابن كثير)

इससे ज़ाहिर होता है कि जब इंसान किसी क़िस्म की कमज़ोरी महसूस करे तो नफ़ली नमाज़ों को घर में कसरत से पढ़े इससे नमाज़ की एहमियत का इल्म होता है और यह भी मालूम होता है कि जब मुसलमान बहुत कमज़ोर हों और वह अपनी नमाज़ें कुफ़्फ़ार

के सामने न पढ़ सकते हों तो घरों में नमाज़ अदा करें। इस वक़्त हम इस मुक़ाम पर हज़रत मरयम की मेहराब का ज़िक्र ज़रूरी समझते हैं और ज़करिया अ़लै० जब जब दाख़िल होते तो उनके पास रिज़्क़ को रखा हुआ पाते थे।

كلما دخل عليها زكريا المحراب وجد عندها رزقاً (آل عمران: ٣٧)

और जब भी ज़करिया अ़लै० उनके पास मेहराब में दाख़िल हुए तो उन्होंने उनके पास रिज़्क़ को पाया

और सहाबा रज़ि० का मामूल यह था कि वह फ़र्ज़ नमाज़ों के अलावा यानी सुन्नत और नफ़िल नमाज़ों को घरों में ही पढ़ा करते थे। इस क़िस्से में इबरत है। महमूद बिन रबीअ़ अंसारी रज़ि० से रिवायत है कि इतबान बिन मालिक रज़ि० जो कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सहाबी थे और अंसार की जानिब से जंग बदर में शरीक हुए थे, वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास तशरीफ़ लाए और आप से फ़रमाया ऐ अल्लाह के रसूल मेरी निगाहों ने जवाब दे दिया है और मैं अपनी क़ौम को नमाज़ भी पढ़ाता हूँ और जब शिद्दत से बारिश होती है तो वादियाँ भर जाती हैं जिसकी वजह से मैं नमाज़ पढ़ाने नहीं जा सकता और कभी मस्जिद तक नहीं पहुंच पाता हूँ कि उन्हें नमाज़ पढ़ा सकूँ, मेरी ख़्वाहिश है कि ऐ अल्लाह के रसूल आप मेरे घर तशरीफ़ लाइए और आप मेरे घर में किसी भी मुक़ाम पर नमाज़ पढ़ लीजिए ताकि मैं उसे मुसल्ला यानी नमाज़ पढ़ने की जगह बना लूँ, सहाबी ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उनसे फ़रमाया: इन शाअल्लाह मैं ऐसा ज़रूर करूंगा, इतबान ने कहा कि जब सुबह हुई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० दिन चढ़े मेरे घर आए और इजाज़त तलब की मैंने इजाज़त दे दी आप जब घर में दाख़िल हुए तो बैठे नहीं उसके बाद फ़रमाया: أين تحب ان اصلى من بيتك؟ बताओ कि तुम कहाँ पसंद करते हो कि मैं तुम्हारे घर में नमाज़ पढ़ूँ? इतबान ने कहा कि मैंने घर के एक एक गोशे की तरफ़ इशारा किया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम वहाँ खड़े हो गए और उसके बाद अल्लाहु अक्बर कहा तो हम भी आपके पीछे खड़े हो गए हम ने सफ़ बना ली और दो रक्अ़त नमाज़ अदा की। फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने

सलाम फ़ैर दिया। (बुख़ारी)

इब्ने हजर रह० ने इस हदीस के फ़वाइद बयान करते हुए फ़रमाया कि: घर में कोई ख़ास मुक़ाम नमाज़ के लिए बनाया जा सकता है मगर मस्जिद में किसी जगह को ख़ास करने की सख़्त मुमानिअ़त है जैसा कि अबु दाउद की हदीस में है क्योंकि इससे रिया नमूद और दिखावा आ सकता है और मस्जिद के अ़लावा घर में जो जगह नमाज़ के लिए ख़ास कर ली जाएगी उसे मस्जिद का हुक्म नहीं लगाया जाएगा।

नसीहत नं. 5

घर वालों की ईमानी तर्बियत करना

عن عائشه رضی الله عنها قالت كان رسول الله ﷺ يصلى من الليل فاذا اوتر قال قومى فاوترى يا عائشة. (رواه مسلم)

''आ़ईशा रज़ि० से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब रात में नमाज़ (तहज्जुद) पढ़ते और वित्र पढ़ लेते तो फ़रमाते ऐ आ़ईशा उठो और वित्र की नमाज़ पढ़।''

और नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

رحم الله رجلا قام من الليل فصلى فايقظ امرأته فصلت، فان أبت نضح فی وجهها الماء (احمد، ابو داؤد)

''अल्लाह तआ़ला उस शख़्स पर रहम करे जो रात में नमाज़ के लिए उठे फिर वह नमाज़ पढ़े और अपनी बीवी को भी नमाज़ के लिए जगाए फिर वह नमाज़ अदा करे अगर औरत उठने से इंकार करे तो वह उसके चहरे पर पानी के छींटे मारे।''

–घर की औरतों को सदक़ा करने पर उभारना ताकि ईमान में ज़्यादती हो, यह भी एक बड़ा अ़ज़ीम मामला है इस पर आपने उभारा है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"يا معشر النساء تصدقن فانى رايتكن اكثر اهل النار (رواه البخارى، الفتح: ۱/ ۴۰۵)

''ऐ औरतों की जमाअ़त! तुम सदक़ा ज़रूर करो

इसलिए कि मैंने तुम में से अक्सर औरतों को दोज़ख़ वालों में से देखा है।''

अगर औरत ज़्यादा ही ख़ैर व ख़ैरात पर राग़िब हो तो उसके लिए चाहिए कि वह अपने घर में एक पेटी रख ले और उसमें हस्बे इसतिताअ़त चंदा डालती रहे। ताकि उसके जमा हो जाने पर फ़ुक़रा व मसाकीन व मुहताजों को दिया जा सके और यह समझे कि इसमें जो कुछ भी जमा हुआ है वह ग़रीबों को हक़ है क्योंकि मुस्लिम घराने पर उनका हक़ है।

और सुन्नत की पैरवी करना चाहे तो उनको अयामे बीज़ यानी 13,14,15 के रोज़े रखना चाहिए या तो पीर का रखें या जुमेरात का रखें। आशूरा, अरफ़ा, 9,10 मुहर्रम, शाबान के 15 दिन तक रोज़े रखे, ताकि वह रसूल की इक़्तिदा करने वाली और घरों में ईमान की ज़्यादती करने वाली बनें।

(हमारे हिन्दुस्तान में बाज़ जगह यह रिवाज है कि घर में एक हांडी रख दी जाती है और औरतें एक दो मुट्ठी आटा पकाते वक़्त रोज़ाना निकाल देती हैं और उस आटे को हफ़्ता या जुमा के रोज़ मस्जिद भेज देती हैं इस तरह हफ़्ता में मोहल्ला में बहुत जमा हो जाता है और दीन के कोमों में काम आता है)

नसीहत नं. 6

घरों में अज़्कारे-मस्नूना का एहतमाम करना

जैसा कि इमाम मुस्लिम रह० ने रिवायत किया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

اذا دخل الرجل بيته فذكراسم الله تعالٰى حين يدخل وحين يطعم، قال الشيطان: لامبيت لكم ولاعشاء هٰهنا وان دخل فلم يذكراسم الله عند دخوله قال: أدركتم المبيت، وان لم يذكراسم الله عند مطعمه قال: ادركتم المبيت والعشاء

(امام احمد ٣/٣٤٦، مسلم)

जब आदमी अपने घर में दाख़िल हो और दाख़िल होते वक़्त और खाना खाते वक़्त अल्लाह का नाम ले तो शैतान कहता है कि अब मेरे लिए इस घर में न ठिकाना है और न शाम का खाना है।

और अगर वह दाख़िल हुआ और उसने घर में दाख़िल होते वक़्त अल्लाह का नाम न लिया तो शैतान कहता है कि रात बसर करने की जगह मिल गई। और अगर खाना खाते वक़्त भी उसने अल्लाह का नाम न लिया तो कहता है अब रात भी गुज़ारो और शाम का खाना भी खाओ।

इस हदीस के तहत मालूम हुआ कि हर मुस्लिम को अपने घर में आते-जाते मस्नून दुआऐं पढ़नी चाहिए ताकि शैतान का खाने पीने और रात गुज़ारने की जगहों से सफ़ाया हो सके।

घर से निकलने की दुआ

अबू दाऊद ने अपनी सुनन में रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब आदमी अपने घर से निकले तो पढ़े। بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

कि अल्लाह के नाम से मैंने अल्लाह ही पर भरोसा किया किसी भी क़िस्म की ताक़त व कुव्वत सिर्फ़ अल्लाह ही के लिए है।

तो इससे कहा जाता है "حسبک قد هديت وكفيت ووقيت" बस तेरे लिए इतना ही काफ़ी है बेशक कि तू हिदायत पा चुका और तेरे लिए किफ़ायत कर गया और तूने बचा लिया। तो शैतान दूसरे शैतान से कहता है कि अब तेरे लिए तो आदमी को बहकाने की कोई जगह बाक़ी न रही इसलिए कि वह हिदायत दिया जा चुका है और उसे बचा लिया गया है और उसका पढ़ना उसके लिए काफ़ी हो गया है। (अबु दाऊद 5095, तिर्मिज़ी: 3426)

और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का मामूल था कि जब आप घर में दाख़िल होते तो मिसवाक किया करते थे। उम्मुल मोमिनीन हज़रत आ़इशा फ़रमाती हैं कि "اذا دخل بيته بدأ بالسواك" (सहीह मुस्लिम) जब भी आप अपने घर में दाख़िल होते तो मिस्वाक करते थे।

☆☆☆

नसीहत नं. 7

घर में बराबर सूरः बक़रह की तिलावत जारी रखना ताकि शैतान भागे।

इस सिलसिले में अहादीस तो बहुत से मिलती हैं लेकिन हम चंदा का ज़िक्र कर रहे हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

لاتجعلوا بيوتكم قبوراً ان الشيطان ينفر من البيت الذى تقرأفيه سورة البقرة (صحيح مسلم : ١/٥٣٩)

तुम अपने घरों को क़ब्रस्तान न बनाओ इसलिए कि शैतान उस घर से निकल भागता है जिसमें सूरः बक़रह पढ़ी जाती है।

और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

اقرؤا سورة البقرة فى بيوتكم فان الشيطان لايدخل بيتا يقرأ فيه سورة البقرة (حاكم ١/٥٦)

अपने घरों में सूरः बक़रह की तिलावत करो इसलिए कि शैतान उस घर में दाख़िल नहीं होता है जिसमें सूरः बक़रह पढ़ी जाती है।

सूरः बक़रह की आख़री दो आयतों की बहुत फ़ज़ीलत है और घर में उनकी तिलावत की वजह से असर भी होता है क्योंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि:

अल्लाह तआ़ला ने आसमानों और ज़मीन की पैदाइश से दो हज़ार साल पहले एक किताब लिखी और वह अ़र्श के पास है और उसमें सूरः बक़रह की आख़री दो आयतों को उतारा। जिस घर में दोनों आख़री आयतें तीन रात न पढ़ी जाएें तो उस घर के क़रीब शैतान हो जाता है। (अहमद 274/4)

नसीहत नं. 8

घर वालों को घर में इल्म शरअ़ी सिखाया जाए। हर घर के ज़िम्मेदार पर फ़र्ज़ है कि वह अपने घर वालों की हिफ़ाज़त करे और अल्लाह तआ़ला के हुक्म के मुताबिक़ उनको और अपने आपको जहन्नम की आग से बचाए जैसा कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

يا ايها الذى آمنوا قوا انفسكم واهليكم ناراً وقودها الناس والحجارة (سورة التحريم آيت ٦)

"ऐ ईमान वालो! तुम अपने आप को और अपने एहल व अयाल को दोज़ख़ की आग से बचाओ जिसका ईंधन लोग और पत्थर हैं।

यह आयत दरहक़ीक़त इस बात पर उभारती है कि एहले बैत को यानी अपने घर के अफ़राद को और अपने बाल बच्चों को, बीवी को तालीम दी जाए उनकी इस्लामी की रोशनी में तर्बियत की जाए उनको अच्छे कामों का हुक्म दिया जाए और बुरे कामों से रोका जाए।

मुफ़स्सिरीन ने इस आयत की तशरीह व तफ़्सीर इस तरह की है:

क़तादा रह० ने फ़रमाया घर का बड़ा अपने एहल व अ़याल को अल्लाह की फ़रमांबरदारी, उसकी इताअ़त का हुक्म देगा और उन्हें बुराई व गुनाह वाले आमाल से मना करेगा बल्कि रोकेगा। अल्लाह के हुक्म को जारी करने में वह उनकी मदद करेगा और उनको हुक्म देगा कि वह अमल करें, और जब अल्लाह की नाफ़रमानी देखेगा तो वह उनको डांटेगा और फिटकारेगा।

ज़हहाक और मक़ातिल ने कहा: हर मुसलमान की ज़िम्मेदारी है कि वह अपने एहल और क़राबतदार रिश्तेदारों को और अल्लाह की बंदियों को अल्लाह ने जो उन पर फ़र्ज़ किया है उसकी तालीम दे और जिससे रोका और मना किया है उससे बाज़ रखे।

हज़रत अ़ली रज़ि० ने फ़रमाया कि वह उनको तालीम देगा और अदब सिखाएगा।

तबरी रह० ने फ़रमाया कि हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम अपनी औलाद को और अपने एहल व अयाल को दीन और ख़ैर की बात सिखाएं और इस क़दर अदब सिखाएं कि वह दूसरी तमाम चीज़ों से बेनियाज़ हो जाएं। यानी बे अदबी और बुरे आमाल से बच जाएं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम लौंडियों को बांदियों को और घर में काम करने वाली औरतों को तालीम व तर्बियत पर उभारा करते थे तो फिर आज़ाद जो कि तुम्हारी औलाद और एहल व अ़याल व एहले ख़ान्दान हैं उनकी तालीम व तर्बियत पर किस क़द्र उभारते होंगे।

'इमाम बुख़ारी रह० ने तो अपनी बुख़ारी शरीफ़ में एक बाब ही बांधा है ''आदमी का अपनी लौंडी और अपने एहल को तालीम देने का बयान'' फिर इसके तहत यह हदीस बयान की है:

قال رسول الله ﷺ ثلاثة لهم اجران...... ورجل كانت عنده امة فادبها فاحسن تاديبها، وعلمها فاحسن تعليمها، ثم اعتقها فتزوجها فله اجران.

तीन आदमी ऐसे हैं जिनको दोहरा अजर व सवाब मिलता है उनमें से एक शख़्स वह है जिसके पास लौंडी है उसने उसको उमदा तालीम व अदब से आगाह किया और उसको उमदा इल्म सिखाया फिर उसे आज़ाद कर दिया फिर उससे शादी कर ली तो उसके लिए दोहरा अजर है।

इब्ने हजर रह० ने फ़रमाया कि: इमाम बुख़ारी ने जो बाब बांधा है और उसकी मुताबिक़त में जो हदीस लाए हैं वह लौंडी के सिलसिला में तो दलील है और एहल व अ़याल पर क़यास किया है इसलिए कि आज़ाद अहल व अयाल की तालीम पर तवज्जुह देना भी अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म में से है जिसने लौंडियों तक की तालीम की ताकीद की है। (फ़तहुल बारी-18)

और इस ग़फ़लत से निकलने का सही रास्ता यह है कि वह अपने एहल व अ़याल व अक़रबा की तालीम व तर्बियत के लिए हफ़्ता में एक दिन मुक़र्रर कर ले जिसमें कि वह अपने एहल व अ़याल या रिश्तेदारों की मजलिस मुंअ़क़िद करे और जो लोग हाज़िर न हो सकते हों उनसे वक़्त ले लें और वक़्ते मुक़र्ररा पर पहुंच कर उन्हें उभारे कि वह सब दीन के समझने की ख़ातिर जमा हों और फिर इस मामूल पर जम जाए। ख़ुद भी हाज़िर रहे और रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तालीमात कुरआन व सुन्नत के हवाले से पेश करे। याद रहे कि सबसे सच्चा कलाम रब्बुल आ़लमीन का कलाम है और सबसे बेहतर हिदायत का रास्ता रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का है।

इमाम बुख़ारी रह० ने एक बाब बांधा है कि ''क्या औ़रतों की

तालीम व तर्बियत और इल्म सिखाने के लिए एक दिन अ़लाहिदा मुक़र्रर किया जा सकता है'' और इसके तहत उन्होंने अबू सईद रज़ि० की यह हदीस पेश की है कि औरतों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा कि आपके पास मर्दों ने ग़लबा हासिल कर लिया है आप औरतों के लिए बज़ाते खुद एक दिन मुक़र्रर कीजिए और वाज़ व नसीहत कीजिए तो आपने उन औ़रतों से एक दिन का वादा कर लिया, फिर आप इसमें उनको वाज़ व नसीहत किया करते।

• इब्ने हजर रह० ने फ़रमाया कि एक रिवायत سهل بن ابو صالح عن ابيه عن ابى هريره मरवी है जिसमें इस क़िस्म का वाक़िआ है और इसमें यह है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने औरतों से फ़रमाया: "موعدكن بيت فلان فاتاهن فحدثهن" तुम्हारे लिए फ़लाँ के घर में आने का वादा है तो आप उनके पास उस घर में आए और उनको नसीहत की, उस हदीस से यह मालूम हो रहा है कि घरों में औ़रतों को तालीम दी जा सकती है। और सहाबा रज़ि० को औ़रतों को इल्म दीन सीखने की तड़प थी और यह भी इल्म हो रहा है कि सिर्फ़ मर्दों की तालीम पर तवज्जुह देना और औरतों की तालीम पर तवज्जुह न देना बहुत बड़ी कोताही और ख़ामी है घरों के ज़िम्मेदारों को इसका ख़याल रखना चाहिए और बच्चियों को तालीम से महरूम नहीं रखना चाहिए इसी तरह वह लोग जो कि उलमा हैं और दावते-दीन का काम कर रहे हैं उन्हें भी औ़रतों में तबलीग़ और दावत पहुंचाने से कोताही नहीं करनी चाहिए। बाज़ उलमा का तो यह आ़लम था कि वह कहते थे कि हमने एक दिन औ़रतों के लिए ख़ास कर रखा है। हमारे एहले बैत ने हमें बताया कि आ़म तौर से उसमें औ़रतों को पढ़ाया जाता और वह दिन खुसूसियत से औ़रतों के लिए ही है, जिसमें उन्हें अ़ल्लामा इब्ने सअ़दी की तफ़्सीर "تيسير الكريم الرحمن فى تفسير كلام المنان" पढ़ाई जाती है। अगर कोई चाहे तो इस तफ़्सीर का दर्स औरतों में शुरू कर सकता है जो सात मुफ़स्सल जिल्दों में निहायत आसान और आम फ़हम उसलूब में है जो पढ़ी जा सकती है या उसमें बाज़ सूरतों को बयान किया जा सकता है। رياض الصالحين भी दर्स में रखी जा सकती है जिसमें चंद अहादीस और तालीक़ात और मुफ़ीद मसाईल हैं। और अगर मुमकिन हो तो نـزهة الـمتقين भी पढ़ी जा सकती है। अल्लामा सिद्दीक़ हसन ख़ाँ रह० की किताब "حسن الاسوة بماثبت عن الله و رسوله"

“في النسوة” भी पढ़ सकते हैं इसी तरह अ़ल्लामा अबू बक्र जाबिरु अल जज़ाईरी की किताब المرأة المسلمة। जिसका तर्जुमा अब्दुल जब्बार अब्दुल ग़नी नागपुरी ने किया है मुताला में रखी जा सकती है और औरतों की तालीम व तर्बियत पर ज़ोर दिया जा सकता है जैसा कि एक बात यह है कि औरतों को बाज़ दीनी एहकाम सिखाने की ज़रूरत है जैसे तहारत, फ़ितरी तौर पर ख़ून वग़ैरा आना जैसे हैज़, निफ़ास वग़ैरह की तालीम, नमाज़, हज, रोज़ा, ज़कात के एहकाम, खाने-पीने और लिबास की ज़ीनत वग़ैरा गाने-बजाने तसवीर कशी वग़ैरा के एहकाम तो इन मौज़ूआ़त पर फ़ज़ीलतुल शैख़ अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अ़ज़ीज़ बिन बाज़ और शैख़ मोहम्मद बिन सालेहु अल् उसैमीन वग़ैरहुमा और उनके अलावा दूसरे उलमा के इल्मी किताबचे और किताबें बहुत मुफ़ीद हैं, औरतों को मुफ़ीद कैसेट भी सुनाए जा सकते हैं। उनकी तालीम व तर्बियत और उनको वाज़ व नसीहत के मराकिज़ (केन्द्र) भी क़ायम हैं जहाँ उलमा और अच्छी पाक तीनत उस्तानिया तालीम देती हैं वहाँ दीन के इल्म से फ़ैज़ याब किया जा सकता है और यह एहतमाम हो कि औरतें वहाँ महज़ तफ़रीह के लिए न जाऐं बल्कि शरअ़ी हुदूद की रिआ़यत करते हुए सीखने के लिए जाऐं।

नसीहत नं. 9

अपने घर में इस्लामी लाईब्रेरी क़ायम करो

अपने घर की तर्बियत के लिए एक बेहतर व मददगार पहलू यह भी है कि घर में इस्लामी कुतुब का ख़ज़ाना क़ायम किया जाए कोई ज़रूरी नहीं है कि यह इस्लामी मक्तबा यानी लाइब्रेरी बहुत बड़ी हो घर के एक कोने में छोटी मोटी भी क़ायम की जा सकती है और उनमें उमदा व मुफ़ीद किताबों को जमा किया जा सकता है जिसमें इबरत व नसाईह और इस्लामी मालूमात का ख़ज़ाना हो। आपका यह इल्मी ख़ज़ाना आसानी से मुंतक़िल भी हो सके। आप इसकी तरफ़ अपने बच्चों और एहले बैत को मुतव्वजह और राग़िब भी कर सकते हैं और बारी भी मुक़र्रर कर सकते हैं कि वह इससे फ़ायदा उठाऐं, घर के एक कोने में साफ़ सुथरी जगह हो या आपके बेडरूम में हो या

ड्राईंग रूम में हो जहाँ भी आसानी से इंसान किताब लेकर पढ़ सके।

कुतुब ख़ाना का उमदा होना भी ज़रूरी है क्योंकि उमदगी को अल्लाह तआ़ला बहुत पसंद करता है कुतुब ख़ाना में किताबों की तर्तीब हो और हुस्न सलीक़ा भी हो और मुख़्तलिफ़ बहसों और मसाईल पर कुतुब भी हो, जिसके ज़रीआ़ बच्चे मदारिस में फ़ायदा भी उठा सकें। इसमें जो किताबें हों उनसे छोटे बड़े मर्द औरत बराबर फ़ायदा उठा सकें। कुछ ऐसी किताबें भी हों जो आने वाले महमानों को बतौर तोहफ़ा भी पेश की जा सकें और अलमारी के ख़ानों पर सजी हुई हों कि आसानी से हर मौज़ू की किताब ली जा सके और एक रजिस्टर हो जिसमें हर मौज़ू की किताब तर्तीब से लिखी हुई हो और हर एक मौज़ू का एक अलाहेदा हिस्सा लाईब्रेरी की अलमारी पर हो ताकि जो किताब हासिल करना हो आसानी से हासिल की जा सके। तफ्सीर का एक ख़ाना, अहादीस का एक ख़ाना, फ़िक्हा का एक ख़ाना, बच्चों की किताबों का एक ख़ाना। ग़र्ज़कि हर मौज़ू का एक एक अलाहेदा हिस्सा हो जहाँ से आसानी से मौज़ू की फेहरिस्त के ऐतबार से हासिल की जा सके और हर मौज़ू की फ़ेहरिस्त के एतबार से हासिल की जा सके और हर मौज़ू पर मुख़्तलिफ़ मुसन्निफ़ों की किताबें भी हों कि पढ़ने वाला जो किताब जिस मुसन्निफ़ की हासिल करना चाहे आसानी से ले ले इसके अलावा किताबों पर नम्बरात का इंदराज हो और किताबें इसी तर्तीब से रखी हुई हों तो आसानी से नम्बर के ज़रिये हासिल की जा सकती हैं। चंद मश्वरे इस तरह दिए जा सकते हैं कि किताबों को किस तर्तीब से रखा जाए। जैसे:

अल्तफ़्सीर: मैं तफ़्सीर इब्ने कसीर अरबी वाली अरबी के ख़ाना में और उर्दू वाली उर्दू के ख़ाना में, ज़बदतुत्तफ़्सीर अशक़र की। इसी तरह सैय्यद कुतुब की तफ़्सीर ज़िलालुल क़ुरआन, इब्ने उसैमीन की उसूले तफ़्सीर, मोहम्मद सिबाग़ की लमहात फ़िल उलूमिल क़ुरआन, मौलाना दाऊद राज़ का मुफ़स्सर क़ुरआन उर्दू तर्जुमा वाला, तफ़्सीर अहसनुल बयान, शैख़ अल् जज़ाईरी की तफ़्सीर क़ुरआन।

हदीस: अहादीस की किताबों में सबसे सहीह और मुस्तनद किताब सहीह बुख़ारी शरीफ़ है। उसके बाद एहम तरीन अहादीस का ज़ख़ीरा सहीह मुस्लिम शरीफ़, सहीह अल् कलिमुत्तय्यिब सुबह व शाम के मुसतनद अज़कार और अबू दावूद, नसई, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा,

चालीस अहादीस, रियाजुस्सालेहीन इसकी तफ़्सीर नुज़हतुल मुत्तक़ीन, सहीह तर्ग़ीब व तर्हीब वग़ैरा वग़ैरा।

अक़ीदाः मैं किताबुत्तौहीद की शरह फ़तहुल मजीद, हिकमी की अलामुल सुन्नतुल मंसूरा, तहक़ीक़ शुदा हिक्मी की मआ़रिजुल क़ुबूल तहक़ीक़ शुदा, अल्बानी की तहक़ीक़ शुदा शरह अल् अक़ीदतु त्तहाविया, अक़ीदतुल मोमिनीन तकवियतु ईमान वग़ैरा।

फ़िक़हाः मैं इब्ने ज़ोबान की मनारुस्सबील, अल्बानी की इरवाउल ग़लील, ज़ादुल मआ़द, इब्ने क़ुदामा की अल्मुग़नी, उलमा-ए-सऊदिया के फ़तावा जिनमें शैख़ अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज़ का फ़तावा, मोहम्मद बिन सालेहउसैमीन का फ़तावा, अब्दुल्लाह बिन जिबरीन का फ़तावा, शैख़ अलबानी की सिफ़ता सलातुल् नबी, शैख़ अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज़ की सिफ़तु सलात, अल्लामा सियालकोटी की सलातुल रसूल मुहक्क़िक़, सबीलुर रसूल, फ़िक्हे किताबो सुन्नत, फ़िक़हुल हदीस वग़ैरा। अल्लाम अलबानी, के एहकामुल जनाइज़ और इसी तरह मौलाना अब्दुल रहमान मुबारकपुरी की किताब अल्जनाइज़, शैख़ अबु बकर जाबिरुल जज़ाईर की अरबी किताब मिंहाजुल मुस्लिम का उर्दू तर्जुमा इस्लामी तर्जे ज़िंदगी वग़ैरा और भी दूसरे मुसन्निफ़ीन की उमदा फ़िक़ा पर लिखी हुई तसनीफ़ात जो कि किताब व सुन्नत से न टकराती हों रखी जा सकती हैं।

अख़लाक़ और तज़किया नुफ़ूसः

मैं तहज़ीब मदारिकुल सालेकीन, अलफ़वाइद, अल्जवाबुल काफ़ी, तहज़ीब मोईज़तुल मोमिनीन, ग़िज़ाउल अलबाब वग़ैरा।

तारीख़ और सीरत में

अल् बिदाया वननिहाया, मुख़्तसरुल शमाईल अल् हमदी, अल् रहीक़ुल मख़्तूल मोहतरम मौलाना सफ़ीउल रहमान मुबारकपुरी, अल्अवासिम मिनल क़वासिम इब्नुल अरबी की तहक़ीक़ शुदा, सीरतुल नबवी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अल्लामा शिबली नोअ़मानी रहमुल लिल्आ़लमीन शैख़ क़ाज़ी सुलेमान मंसूर पुरी और भी बहुत सी मुफ़ीद उर्दू अरबी की इस मौज़ूअ़ पर मुख़्तलिफ़ मुसन्निफ़ीन की क़ुतुब रखीं जा सकती हैं।

जिन किताबों का तज़किरा हमने किया है उनके अलावा भी

उमदा कुरआन व सुन्नत के मुताबिक़ किताबें अपनी लाईब्रेरी की ज़ीनत बनाई जा सकती हैं।

नसीहत नं. 10

घर में कैसेटस लाईब्रेरी हो

हर घर में कैसेट का इस्तेमाल खैर में भी हो सकता है और शर व बुराई में भी, अब हम को यह सोचना है कि हम इसका इस्तेमाल किस तरह करें कि अल्लाह तबारक वतआ़ला हम से खुश व राज़ी हो जाए?

घर में कैसेट लाईब्रेरी जो क़ायम हो उसमें कुरआने करीम के क़ारियों की तिलावत और तक़ारीर और अच्छे अच्छे उलमा के खि़ताबात मवाइज़ और बड़े बड़े रिसर्च स्कालरों के बयानात वग़ैरा पर मुशतमिल हों और मक्कतुल मुकर्रमा और हरम मदनी में रिकार्ड हुई तरावीह की नमाज़ और दिल पज़ीर दुआओं और असर वाली कैसेटें हों, घर में बच्चों के सामने लगा दी जाऐं और जो भी महमान आऐं उन्हें सुनाया जाए। फ़िल्मी गानों और वीडियो फिल्म की कैसिटों से बचा जाए बल्कि इस सिलसिला में दीनी फ़तावा के कैसेट रखे जाऐं शैख़ अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लह बिन बाज़, शैख़ उसैमीन, शैख़ नासिरुद्दीन अल्बानी, शैख़ अल् फ़ौज़ान वग़ैरहुम उलमा के बयानात और फ़तावा हैं।

मुसलमानों को फ़तावा हासिल करते हुए यह देखना चाहिए कि हम किन उलमा से फ़तावा हासिल कर रहे हैं अच्छे उलमा के फ़तावे हासिल किए जाऐं फ़तावा हासिल करते वक़्त यह ज़रूरत देखना चाहिए कि उन उलमा किराम से फ़तावा लें जो कि मज़हबी तअ़स्सुब से दूर हों और अपने फ़तावा को कुरआन व सुन्नत के दलाईल से पेश करते हों। जो मुफ़्ती क़ुरआन व हदीस का हवाला न पेश करे उस से परहेज़ बेहद ज़रूरी है। बच्चों की इस्लाह के लिए भी उमदा अच्छी केसेटस मिलती हैं उन्हें हासिल किया जाए।

बर्रे सग़ीर से तअ़ल्लुक़ रखने वाले उलमा किराम की बसीरत अफ़रोज़ कैसेटस भी मौजूद हैं मसलन अल्लामा एहसान इलाही ज़हीर

मौलाना सफ़ीउर रहमान साहब मुबारकपुरी, मोहतरम डाक्टर फ़ज़ल इलाही (रियाज़), सैयद मेराज रब्बानी (मर्कज़ जालियात हाईल), मोहतरम हाफ़िज़ फ़ज़लुल रहमान, क़ारी अहमद दीन (मक्का मुकर्रमा) शैख़ तौसीफ़ु रहमान वग़ैरा की कैसिटें ख़रीदते या सुनते वक़्त मंदरजा ज़ैल उमूर का ख़्याल करने की ज़रूरत है क्योंकि बाज़ार में कैसेटें मुख़्तलिफ़ हज़रात की मिलती हैं:

1. कैसेटस तक़ारीर की हों या क़ुरआन करीम की तिलावत की। क़व्वालियाँ सुनना दीन का काम नहीं!
2. तक़ारीर करने वाले क़ुरआन व सुन्नत से हर बात को बयान करते हों।
3. नाजी ग्रिरोह और एहले-सुन्नत वल् जमाअ़त के अक़ीदा से न टकराती हों।
4. तक़रीर में मआ़शरा की इस्लाह की फ़िक्र हो और सहीह अक़ीदे की निशांदही।
5. तक़रीर करने वाला अपने रब को राज़ी करने की ग़र्ज़ से जद्दोजहद कर रहा हो न कि अपनी जमाअ़त या अपने गिरोह को खुश करने के लिए।

नसीहत नं. 11

घर में सालेह उलमा और तलबा को बुलाना

رب اغفرلی ولوالدی ولمن دخل بیتی مؤمناً وللمؤمنین
والمؤمنات ولا تزدالظالمین الا تباراً (نوح۲۸)

"मेरे रब तू मेरी और मेरे वालदैन की और उन लोगों की जो मेरे घर में मोमिन बन कर दाख़िल हों और मोमिन मर्दों और औरतों की बख़्शिश फ़रमा दे और तू ज़ालिमों की हलाकत के सिवा किसी और चीज़ में इज़ाफ़ा न कर" (यानी उन्हें बिल्कुल हलाक करके रख दे)

तुम्हारे घर में जब एहले ईमान दाख़िल होंगे तो इससे ईमानी नूर में इज़ाफ़ा होगा और उनसे सवालत और बहस व मुबाहिसा और मालूमात करके बहुत से फ़वाइद हासिल होंगे और इसकी मिसाल यूँ समझ लीजिए कि जो मुश्क उठाए हुए होगा वह जहाँ चलेगा वहाँ

मुश्क की ख़ुश्बू फूटेगी अगर तुम उसके ख़रीदार न भी हो तो बग़ैर ख़रीदे ही मुश्क की ख़ुश्बू मिलेगी और वह जो जो उम्दा गुफ़्तुगू करेगा उससे बच्चों को, औलाद को, घर की मस्तूरात को परदा के पीछे से सुनने में फ़ायदा होगा इसलिए जब तुम घर में ख़ैर दाख़िल करोगे तो बुराई खुद बखुद रुक जाएगी।

नोट: यहाँ क़ाबिले-तवज्जुह बात यह है कि ऐसे बुरे उलमा को और लोगों को घर में दाख़िल न किया जाए जिनसे अख़लाक़ व किर्दार बिगड़े। जैसे कि लोग पीरों और बाबाओं को बुलाते हैं और औरतें बच्चे उनकी ख़िदमत करते हैं उनके पीर दबाते और सर की मालिश करते हैं फिर रफ़्ता रफ़्ता वह पैर साहब सब की मालिश कर देते हैं العیاذ باللہ
मुतरजिम

नसीहत नं. 12

घर वालों को शरीअ़त के एहकाम की तालीम देना।

घर में नमाज़ पढ़ना: जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

افضل الصلاة صلاة المرأفی بیته الاالصلوٰة المکتوبة (بخاری)

फ़र्ज़ नमाज़ों के अ़लावा आदमी की बेहतर नमाज़ उसके घर में है।

फ़र्ज़ व वाजिब नमाज़ों का मस्जिद में पढ़ना अफ़ज़ल है बग़ैर उज़्र के घर में नहीं पढ़नी चाहिए। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि:

تطوع الرجل فی بیته یزید عن تطوعه عن الناس،
کفضل صلاة الرجل فی جماعة علی صلاته وحده (ابن ابی شیبه
صحیح الجامع: ۲۹۵۳)

आदमी का अपने घर में नफ़िल नमाज़ों का पढ़ना लोगों के सामने उसके नफ़िल पढ़ने से ज़्यादा अच्छा है जिस तरह कि एक आदमी जमाअत के साथ

फ़र्ज़ नमाज़ अदा करता है और उसकी फ़ज़ीलत अकेले नमाज़ पढ़ने से ज़्यादा है।

और अगर औरतों की नमाज़ घर के अंदरून गोशा में हो तो अफ़ज़ल है जैसा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है:

خير صلاة النساء فی قعر بیوتهن (الطبرانی)

औरतों की सबसे बेहतरीन नमाज़ उनके घरों के अंदरून गोशा में है।

किसी के घर में एहले-ख़ाना की इजाज़त के बग़ैर इमामत नहीं करनी चाहिए क्योंकि अपने घर में एहल ख़ाना ही इमामत का हक़दार है और उसकी इजाज़त के बग़ैर उसकी मख़्सूस जगह पर न बैठे। जैसा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

لايؤم الرجل فی سلطانه، ولا يجلس على تكرمته فی بيته الا باذنه (ترمذی ۲۷۷۲)

आदमी किसी की सलतनत में यानी किसी जगह एक शख़्स इमाम हो तो उसकी इजाज़त के बग़ैर इमामत न करे और एहले-ख़ाना की इजाज़त के बग़ैर उसकी मख़्सूस जगह पर न बैठे।

यानी इमामत के लिए आगे न बढ़े अगर्चे वह उससे ज़्यादा पढ़ा लिखा ही क्यों न हो और शरीअ़त का इल्म ही क्यों न जानता हो क्योंकि वह उसकी मिलकियत है। और इसी तरह किसी के घर में उसकी बैठक पर बग़ैर इजाज़त न बैठे जब तक कि वह इजाज़त न दे।

इजाज़त लेना सिखाइए

किसी के घर में बग़ैर इजाज़त दाख़िल न होने की तलक़ीन करे जैसा कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

يـا ايها الذين آمنوا لاتدخلوا بيوتا غير بيوتكم حتى تستانسوٓا وتسلموا على اهلها ذلـكـم خيـر لـكم لعلكم تذكرون، فان لم تجدوا فيها احدا فلا تدخلوها حتى يوذن لكم وان قيل لكم ارجعوا فارجعوا هو ازكى لكم والله بما تعملون عليم (سورة النور ۲۷/۲۸)

''ऐ ईमान वालो! तुम अपने घरों के अलावा किसी के घर में दाख़िल न हुआ करो जब तक कि तुम उनसे मानूस न हो जाओ और नम घर वालों पर सलाम किया करो ऐसा करने में तुम्हारे लिए भलाई

व ख़ैर है शायद तुम नसीहत हासिल करो, अगर तुम घर में किसी को न पाओ तो तुम उसमें दाख़िल न हुआ करो हत्ता कि तुम को इजाज़त मिल जाए और अगर तुम से यह कहा जाए कि लोट जाओ तो तुम लोट जाया करो यह ही तुम्हारे लिए ज़्यादा मुनासिब है और अल्लाह तआ़ला इन तमाम उमूर को जो तुम कर रहे हो बख़ूबी जानता है।''

बच्चों और घर वालों को सिखाऐं कि फ्रंट यानी सामने वाले दरवाज़े से घरों में दाख़िल हों। जैसा कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

واتوا البيوت من ابوابها (سورة البقرة: ١٨٨)

कि तुम घरों में उनके दरवाज़ों से आओ।

- ऐसे घरों में बग़ैर इजाज़त दाख़िल होना जाइज़ है जिनमें कोई न रहता हो जबकि घर में आपका सामान वग़ैरा हो और वह घर मेहमान वग़ैरा के लिए बनाया गया हो और मेहमान वग़ैरा उस वक़्त मौजूद न हों जैसा कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

ليس عليكم جناح ان تدخلوا بيوتا غير مسكونة فيها
متاع لكم والله يعلم ماتبدون وماتكتمون (سورة النور : ٢٩)

तुम पर कोई गुनाह नहीं है कि तुम ऐसे घरों में दाख़िल हो जिनमें कोई न रहता हो और उसमें तुम्हारा असबाब व सामान रखा हुआ हो, और अल्लाह उन तमाम चीज़ों को जानता है जो तुम ज़ाहिर करते हो और छुपाते हो।

-घर वालों और बच्चों को यह बताएं कि अक़रबा और दोस्तों के घरों में खाने पीने में कोई हरज नहीं है और ऐसे घरों को खोलने में जो कि दूसरों की मिलकियत में हों और उनकी चाबियाँ तुम्हारे हाथों में हों तो उनका खोलना भी जाइज़ है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

ليس على الاعمى حرج ولا على الاعرج حرج ولا على المريض حرج ولا على انفسكم ان تاكلوا من بيوتكم او بيوت آبائكم او بيوت امهاتكم او بيوت اخوانكم او بيوت اخواتكم او بيوت اعمامكم او بيوت اخوالكم او بيوت خالاتكم او ماملكتم مفاتحه او صديقكم ليس عليكم جناح ان تاكلوا جميعا او اشتاتاً (سورة النور: ٦١)

अंधों पर कोई हरज नहीं है और लंगड़ों पर किसी क़िस्म का हरज है और न ही मरीज़ों पर किसी क़िस्म का हरज है और न खुद तुम पर किसी क़िस्म का हरज है कि तुम अपने घरों में से किसी भी

घर में या अपने बाप-दादा के घरों में या अपनी माओं के घरों में या अपने भाईयों के घरों में या अपनी बहनों के घरों में या अपने चचाओं या अपनी फूफियों के घरों में खाने में कोई हरज नहीं है या उन घरों में जिनकी चाबियों पर तुम मालिक हो या तुम्हारे दोस्तों के घरों में तुम्हारे खाने पीने में एक साथ या मुतफ़र्रिक़ तोर पर खाने में कुछ हरज नहीं है।

औलाद को और ख़ुद्दाम को यह भी तालीम दी जाए कि जब वालिदन अपने कमरे में सो रहे हों और आम तौर से वह सोने का वक़्त हो तो कमरे को बग़ैर इजाज़त न खोलें। यानी फ़ज्र की नमाज़ से पहले, ज़ुहर के बाद, इशा की नमाज़ के बाद। क्योंकि इसमें इस बात का डर है कि वह वालिदैन को ग़ैर मुनासिब हालत में न देख लें। और अगर वह देख लें तो उनके साथ अफ़ू दर गुज़र वाला रवैया इख़्तियार किया जाए। क्योंकि वह चक्कर लगाने वालों में से हैं उनको रोकना या मना करना बहुत मुश्किल बात है इसी लिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

يا ايها الذين آمنوا ليستاذنكم الذين ملكت ايمانكم والذين لم يبلغوا الحلم منكم ثلاث مرات من قبل صلاة الفجر وحين تضعون ثيابكم من الظهيرة ومن بعد صلاة العشاء، ثلاث عورات لكم، ليس عليكم ولاعليهم جناح بعدهن، طوافون عليكم بعضكم على بعض كذالک يبين الله لكم الآيات والله عليم حكيم (سورة النور: ٥٨)

ऐ ईमान वालो! चाहिए कि वह लोग जो तुम्हारी मिलकियत में हैं यानी तुम्हारे ख़ादिम हैं वह और तुम्हारे बच्चे जो अभी बुलूग़त को नहीं पहुंचे हैं तीन मर्तबा तुम से इजाज़त तलब करें। फ़ज्र की नमाज़ से पहले और दोपहर में जबकि तुम कपड़े उतार चुके होते हो यानी क़ैलूलह कर रहे हो और इशा की नमाज़ के बाद यह तीनों भी पर्दा इख़्तियार करने वाले औक़ात हैं। इनके बाद न तुम पर न उन पर जबकि वह गर्दिश करें कोई गुनाह नहीं है क्योंकि तुम में से बाज़ बाज़ के पास चक्कर लगाता ही रहता है। ऐसे ही अल्लाह तुम्हारी आयात व निशानियों को खोल-

खोल कर वाज़ेह तौर पर बयान कर देता है और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है।

दूसरों के घरों में उनकी इजाज़त के बग़ैर झांकना मना है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

من اطلع فى بيت قوم بغير اذن ففقؤوا عينه فلادية له ولاقصاص
(رواه احمد المسند ٣٨٥/٢)

"जो शख़्स किसी भी क़ौम के घर में बग़ैर इजाज़त ताँक-झाँक करे उसकी आँखें फोड़ दो फिर उसमें न किसी क़िस्म की दियत है और न क़िसास है।"

औलाद को यह भी तालीम दी जाए कि ऐसी औरत जिसको तलाक़ रजअ़ी दी गई हो उसे इद्दत गुज़ारने से पहले घर से बाहर नहीं निकालना चाहिए, बल्कि इद्दत गुज़ारने तक उसकी निगहदाश्त और ख़र्च व इख़राजात बर्दाश्त करना चाहिए।"

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

يا ايها النبى اذا طلقتم النساء فطلقوهن لعدتهن واحصوا العدة واتقوا الله ربكم لاتخرجوهن من بيوتهن ولا يخرجن الا ان ياتين بفاحشة مبينة وتلك حدود الله ومن يتعد حدود الله فقد ظلم نفسه لاتدرى لعل الله يحدث بعد ذلك امراً (الطلاق: ١)

"ऐ नबी ﷺ! जब तुम औरतों को तलाक़ दो तो उनको उनकी इद्दत के वक़्त तक तलाक़ दो (यानी तलाक़ रजअ़ी दो) और इद्दत को शुमार करो गिनो और उस अल्लाह से डरो जो तुम्हारा पालनहार है तुम उनको उनके घरों से न निकालो और न वह निकलें हत्ता कि वह कोई वाज़ेह फ़हश अमल की मुर्तकिब हों यह अल्लाह की हदें हैं और जो अल्लाह की हदों से आगे बढ़ता है हक़ीक़त में उसने अपने ऊपर जुल्म किया वह नहीं जानता है कि शायद अल्लाह उसके बाद कोई नया मामला पैदा कर दे।

-शरई मसलेहत के पेशे नज़र शोहर अपनी नाफ़रमान बीवी से घर में और घर से बाहर वक़्ती तअ़ल्लुक़ ख़तम कर सकता है औरत को घर में छोड़ने की दलील क़ुरआन करीम में यह है:

واهجروهن فی المضاجع (النساء: ۳۴)

''तुम उनको ख़्वाबगाहों में अकेला छोड़ दो''

लेकिन औरतों को घर में छोड़ कर घर से बाहर निकल जाने की दलील वह वाकिआ है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ वाक़े हुआ जिस वक़्त कि आपने अपनी बीवियों को उनके कमरों में छोड़ दिया था और अपनी बीवियों के घर से बाहर अपना खाना पीना कर लिया था। (बुख़ारी)

घर में अकेले रात नहीं गुज़ारना चाहिए

इब्ने उमर रज़ि० से मरवी है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मना फ़रमाया कि आदमी अकेला घर में रात गुज़ारे या वह अकेला सफ़र करे। (نهی عن الوحدة ان يبيت الرجل وحده أو يسافر وحده،، رواه احمد المسند ۲/ ۹۱) इसलिए अकेले घर में रात नहीं गुज़ारना चाहिए कि वहशत और ख़ौफ़ न खाए दुश्मन या चोर हमला आवर न हो जाए वह अकेला बीमार न हो जाए और जब उसके साथ कोई साथी होगा तो दुश्मन और चोर वग़ैरह हमला आवर होने से रुक जाएगा और मर्ज़ की हालत में ख़बर गीरी करेगा।

–घर की ऐसी छत पर सोने की मुमानिअ़त है जिसमें चहारदीवारी न हो ताकि गिर न जाए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "من بات ظهر بيت ليس له حجاز فقد برئت منه الذمة" (ابو داؤد السنن ۵۰۴۱) जो शख़्स किसी ऐसे घर की छत पर रात गुज़ारे यानी सोए जिसमें चहार दीवारी नहीं है तो मैं उससे बरी हूँ'' यह इसलिए कि वह सोते-साते गिर न जाए, क्योंकि जब वह करवट बदलेगा और जब कोई चहार दीवारी या परदा वग़ैरा न होगा तो वह गिर जाएगा और कोई चीज़ उसके लिए रुकावट न बनेगी फिर उसकी मौत भी वाक़े हो सकती है उसकी मौत का किसी को शरअ़ी एतबार से ज़िम्मेदार नहीं माना जाएगा क्योंकि उसने ख़ुद अपनी ज़ात के लिए अल्लाह की हिफ़ाज़त का सामान नहीं लिया।

घर वालों की वलियों से बर्तन नापाक नहीं होते जबकि वह बरतनों में मुंह डाल कर कुछ खा पी लें।

अब्दुल्लाह बिन अबु क़तादा रज़ि० से रिवायत है कि उनके लिए वुज़ू का पानी रखा गया तो उसमें बिल्ली ने मुंह डाल दिया तो वह उस पानी से वुज़ू करने लगे तो लोगों ने कहा ऐ अबू क़तादा इसमें

बिल्ली ने मुंह डाल दिया है तो उन्होंने कहा कि मैंने नबी ﷺ को फ़रमाते हुए सुना है; "السنور من اهل البيت وانه من الطوافين والطوافات عليكم" وفى رواية "انها ليست بنجس انها من الطوافين والطوافات عليكم"

बिल्ली एहले बैत में से है वह तुम पर चक्कर लगाने वालों और लगाने वालियों में से है।

और एक रिवायत में है कि वह यानी बिल्ली नापाक नहीं है इसलिए कि वह तुम पर चक्कर लगाने वालों और चक्कर लगाने वालियों में से है।''

नसीहत नं. 13

घर में इजतिमाआ़त मुंअ़कि़द करना

मौक़ा निकाल कर ख़ान्दानी उमूर पर इजतिमाअ़त का इन्इक़ाद भी मुफ़ीद साबित होता है जैसा कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है।

"وامرهم شورى بينهم" और इनका मामला यह है कि आपस में मश्वरा करते हैं।

ख़ान्दान के अफ़राद को जब भी मौक़ा नसीब हो कि वह इकट्ठा हो जाऐं और दाखि़ली और ख़ारिजी मामलात पर बैठकर बाहम मश्वरा करें जो भी ख़ान्दान से मुतअ़ल्लिक़ हों, क्योंकि ऐसा करना इस बात की अलामत होगी कि तमाम ख़ान्दान और अफ़राद पर पकड़ है और वह एक दूसरे के मामलात में फ़आ़ल हैं और एक दूसरे का बाहम तआ़वुन करते हैं फूट नहीं है। हर एक अपनी अपनी मर्ज़ी से अलाहेदा नहीं भाग रहा है इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह तआ़ला ने मर्द को घरेलू ज़िम्मेदारियाँ दी हैं और वह अपने घरेलू मामलात का बड़ा ज़िम्मेदार है और घर में क़रार व सुकून लाने वाला है मगर इस पर दूसरे अफ़राद का भी हक़ है और खु़सूसियत से जब औलाद बड़ी हो जाऐ तो इस पर इज़ाफ़ी ज़िम्मेदारी उनकी तर्बियत की भी आ जाती है उनमें इजतिमाइयत का एहसास और रूह फूंकने की ज़रूरत है क्योंकि अब वह खु़द राय देने के क़ाबिल हो जाते हैं तो घरेलू मामलात और ख़ान्दानी मामलात उनके पेशे नज़र आना भी ज़रूरी है। मसलन दीनी उमूर की रूह फूंकने के लिए ज़रूरी है कि उनसे हज व उमरा और रमज़ान में रोज़े और ज़कात वग़ैरा के मुतअल्लिक़ सवाल व

जवाब और मुनाक़शा किया जाए, बसा औक़ात उन्हें बिठा कर सिला रहमी और अक़रबा के साथ हुस्ने-सुलूक का मौज़ू छेड़ दिया जाए, कभी सैर व तफ़रीह के मौज़ूआत पर और जब कोई घर में तक़रीब हो शादी ब्याह वलीमा और शबे-ज़फ़ाफ़ सुहाग रात या अक़ीक़ा वग़ैरा तो उन मौज़ूआत पर मौक़ा की मुनासिबत से बात-चीत की जाए। कभी किसी के बीमार हो जाने पर अयादत के आदाब बताए जाएें और इंतिक़ाल हो जाने पर नमाज़े जनाज़ा और क़ब्रस्तान में जाने के फ़वाइद से आगाह किया जाए, और कभी एक जगह से दूसरी जगह मुंतक़िल हो जाने के तरीक़ा और घर की सेटिंग पर बात चीत हो, कभी ख़ैर और भलाई के कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने और ग़रीबों, मोहताजों और मिसकीनों की ख़बर गीरी के मौज़ूआत पर बात चीत हो और कभी उनके हाथ लेन देन कराया जाए ताकि वह लेने देने वाले बनें मोहल्ला के फ़ुक़रा के घर खाना वग़ैरा भिजवा दिया जाए ताकि दूसरों को खिलाने का जज़्बा उभरे, इसी तरह ख़ान्दानी मुश्किलात और रिशतेदारों के मामलात और उनके ग़मों को कैसे तक़सीम किया जाए इस पर बहस हो, दीनी बहस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नमाज़ का सहीह तरीक़ा इख़्तियार करने की तालीम दी जाए। उनके दिलों में शिर्क व बिदआ़त से नफ़रत और हर उस चीज़ को तसलीम करने की कुव्वत को पैदा करना चाहिए जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सहीह अहादीस मुबारका से साबित हों। यही वह रास्ता है जिस पर सलफ़ सालेहीन की तर्बियत हुआ करती थी।

यहाँ क़ाबिले ग़ौर और एहम बात यह है कि इजतिमाआत में बहुत सारे मौज़ूआत पर ग़ौर व फ़िक्र तो हो सकता है मगर बच्चे जब बालिग़ हो जाते हैं तो कुछ मसाइल ऐसे हैं जो नौजवानों की ज़ाती दिलचस्पी से मुतअल्लिक़ होते हैं उन्हें इजतिमाआत में हल नहीं किया जा सकता लिहाज़ा! वालिदैन को औलाद की नफ़सियात और खुसूसियात से जबकि वह जवानी के ज़माना में हों उनके मामलात और मुश्किलात को तंहाई में बैठ कर हल करना चाहिए और इसी तरह माओं को भी अपने बच्चों के मसाईल और उनकी मुश्किलात को हल करने की कोशिक करनी चाहिए उन्हें शरअ़ी एहकाम से आगाह करना चाहिए और इस उम्र में उनकी मुश्किलात को हल करने की कोशिश

करनी चाहिए।

मसलन वालिदैन यह कहें कि जिस उम्र में तुम थे मुझे भी उन्हीं परेशानियों से साबक़ा पड़ा था तो मैंने यूँ किया था और अच्छे दोस्तों का साथ इख़्तियार किया था और बुरे साथियों को छोड़ दिया था इस तरह से उनकी क़यादत का हक़ अदा कर सकता हैं। और उनको एक बड़ी बुराई और फ़ितना से महफ़ूज़ रखा जा सकता हैं।

नसीहत नं. 14

ख़ान्दानी झगड़ों को बच्चों के सामने ज़ाहिर नहीं करना चाहिए

जब चंद अफ़राद मिल जुल कर रहते हैं तो चंद मामूली क़िस्म के झगड़े ज़रूर होते हैं ऐसी सूरत में सुलह व आशती ही ख़ैर व भलाई का तरीक़ा है और हक़ की तरफ़ लौटने में फ़ज़ीलत है लेकिन जिसकी वजह से घर का सुकून व इतमिनान दरहम बरहम हो जाता है और दाख़ली सलामती को नुक़सान पहुंचता है दरहक़ीक़त वह घर वालों के सामने झगड़ों शुरूआत है और इसमें वह दो गिरोह में तक़सीम हो जाते हैं या अक्सर मुतफ़र्रिक़ हो जाते हैं। इसकी वजह से औलाद की नफ़सियात पर नुक़्सान दह असर वाक़े होता है और बज़ात खुद छोटे बच्चों पर तो बहुत ज़्यादा इसका असर पड़ता है।

लिहाज़ा वालदैन को घर की हालत पर ग़ौर व फ़िक्र करते रहना चाहिए वह बच्चे के सामने माँ को यानी बीवी को और बीवी शोहर को बुरे कलमात न कहे। बाज़ हालात में देखा गया है कि माँ अपने बच्चे से कहती है कि अपने बाप से न बात करना या उसके बिल्कुल बरअक्स यही बात औलाद को अपने बाप से सुननी पड़े तो ऐसी हालत में औलाद नफ़सियाती तौर पर टुकड़े टुकड़े हो जाती है। लिहाज़ा हमें इख़्तिलाफ़ ना हो इसका बहुत ख़्याल रखना चाहिए और जो कुछ हो चुका है उसका छुपाना भी बहुत ज़रूरी है हम अल्लाह तआला से दुआ करते हैं कि वह दिलों में उलफ़त व मोहब्बत और जोड़ पैदा करे।

नसीहत नं. 15

घर में ऐसे अफ़राद को दाख़िल न होने देना जिनके दीन से वह राज़ी न हो

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "مثل جليس السوء كمثل صاحب الكير" यह अबु दाऊद की रिवायत का एक टुकड़ा है बुरे साथी की मिसाल धोकने वाले की तरह है'' और बुख़ारी शरीफ़ की एक रिवायत में है "وكير الحداد يحرق بيتك او ثوبك او تجد منه ريحا خبيث" (بخاری، الفتح ۴/۳۲۳) और लोहार की भट्टी या तो तुम्हारे घर को जला देगी या तुम्हारे कपड़े को या तुम इससे बुरी बू यानी धुआँ पाओगे यानी बुरा साथी तरह-तरह फ़साद पैदा करेगा और बिगाड़ पैदा करेगा और जब ऐसे मुफ़सदीन और फ़साद पैदा करने वाले अफ़राद किसी घर में दाख़िल हुए तो उन्होंने घर वालों के बीच अदावत और दुश्मनी पैदा कर दी है। मर्द को औरत से और शौहर को बीवी से जुदा कर दिया है अल्लाह की लानत ऐसी औरत पर होती है जो शोहर से किसी मामला की परदा पौशी करे और ऐसे मर्द पर जो औरत से करे यानी बुरे आमाल में मुलव्विस हों, या तो वह लोग वालदैन और औलाद के बीच अदावत का सबब बन जाते हैं और ऐसे ऐसे गुर सिखाते हैं कि अलअमान वलहफ़ीज़।

यह घरों में जादू टोना या चोरी चकारी के जो मनाज़िर मआ़शरे में आज आम हो रहे हैं उनकी वजह यह है कि घरों में बे दीन लोगों का आना जाना आम होता जा रहा है। यह बे दीन जादूगर आज पड़ौसी या पड़ौसन की शक्ल में आ रहे हैं और घरों के सुकून को ख़त्म कर रहे हैं यह वह लोग हैं कि अल्लाह तआ़ला तो उनके दीन से राज़ी नहीं लेकिन अल्लाह तआ़ला के बंदे उसकी परवा किए बग़ैर उन्हें गले से लगाए हुए हैं।

हर फ़र्द पर यह ज़िम्मेदारी आईद होती है कि ऐसे लोगों पर पाबंदी लगाए और घरों के अमन व अमान को क़ायम रखे और मुफ़सदीन से हर हाल में बचने की भरपूर कोशिश करे।

लिहाज़ा ऐसे अफ़राद को निहायत सोच समझ कर अपने बीच जगह देना चाहिए मगर सादा लौह लोग उनकी चालों में आ जाते हैं

यह मुफ़सदीन अपने मक़सद को हासिल करने के लिए कभी दीन का सहारा लेते हैं और कभी दीन का मज़ाक़ उड़ाते हैं, अगर ऐसे अफ़राद पड़ौस के मर्द और औरतों में से ही क्यों न हों या रिश्ते से मुंसलिक क्यों न हुए हों ऐसे अफ़राद की चालों को पहले ही रोज़ ख़त्म कर देना चाहिए।

बाज़ लोग ऐसी मोहिनी सूरत बना कर रहते हैं और ऐसे सीधे और शरीफ़ लगते हैं कि बताया ही नहीं जा सकता मगर जैसे जैसे उनके क़दम घर में जमने शुरू होते हैं वह अपने पर पुरज़े निकालने शुरू कर देते हैं, और बाद में इल्म होता है कि अरे यह तो ज़बर्दस्त फ़ितना परवर है।

और घर की औरत पर एक बड़ी ज़िम्मेदारी आइद हो जाती है जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

> "ایھا الناس ای یوم احرم؟ ای یوم احرم؟ ای یوم احرم؟ قالوا: یوم الحج الاکبر."
>
> ऐ लोगो कौनसा दिन सबसे ज़्यादा हुर्मत वाला है? कौन सा दिन सबसे ज़्यादा हुर्मत वाला है, कौन सा दिन सबसे ज़्यादा हुर्मत वाला है? (इसी बीच नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ख़ुत्बा देते हुए फ़रमाया)
>
> فأما حقكم على نسائكم فلا يوطئن فرشكم من تكرهون ولا يأذن في بيوتكم لمن تكرهون" (ترمذی)
>
> इसलिए तुम्हारा हक़ तुम्हारी औरतों पर ज़बर्दस्त है वह तुम्हारे बिस्तर पर ऐसे लोगों को हरगिज़ न आने दें जिनको तुम नापसंद करते हो और तुम्हारे घरों में भी ऐसे अफ़राद को दाख़िल न होने दें जिनको तुम ना पसंद करो।"

इसलिए ऐ मुस्लिमा औरत अगर तुम्हारा शौहर या तुम्हारे वालिद किसी तुम्हारी पड़ौसन औरत को घर में दाख़िले की इजाज़त न दे तो तुम को बुरा नहीं मानना चाहिए क्योंकि वह समझता है कि उसकी वजह से घर का बिगाड़ हो सकता है और फ़साद का असर नुमायाँ हो सकता है तो अक़्लमंद बन जा और अपनी पड़ौसन औरतों के जैसा बनकर अपने शौहर से ऐसा मुतालबा मत कर बैठ जिसको पूरा करने की वह इसतिताअ़त न रखता हो, और अगर तुम्हारा शौहर

तुम्हें नसीहत करे तो उसकी नसीहत कुबूल कर जबकि वह घर में ऐसे अफ़राद को देखे जो कि वह बुराई और नापसंदीदा कामों को हवा दे रहे हों।

तोहफ़ा

हस्बे इसतिताअत कोशिश करो कि तुम घर में मौजूद रहो घर के ज़िम्मेदार का अपने घर में मौजूद होना मामलात को निज़ाम से चलाने में मददगार होता है और उसके लिए मुमकिन होता है कि वह तर्बियत औलाद और एहवाल की इस्लाह वग़ैरा की निगहबानी कर सके, और बाज़ लोगों की आदत यह होती है कि वह हमेशा घर से बाहर रहते हैं और जब उन्हें कोई गपशप लगाने को नहीं मिलता है तो घर आते हैं यह बहुत ही ख़तरनाक आदत है अगर घर से निकलना अस्बाब व ज़रूरत और अच्छे कामों के लिए है तो फिर कोई हरज नहीं और उसका कोई मवाज़ना भी नहीं कर सकता मगर बुराई और गुनाह के लिए निकलना और वक़्त की बर्बादी या दुनियावी मामलात में मशग़ूलियात के लिए है तो ऐसे शख़्स पर ज़रूरी है कि वह अपनी दुनियावी मशग़ूलियात में कमी करे, तिजारत में से वक़्त निकाले और बेकार मुलाक़ात को ख़त्म करे और जिनके लिए वह इस क़द्र मुशक़्क़त व महनत कर रहा है उन पर अपना कुछ वक़्त सर्फ़ करे किस क़द्र बुरी है वह क़ौम जो अपने एहल व अयाल को बर्बाद कर रही ही है और खेल कूद में वक़्त ज़ाए करके रात रात भर जाग रही है। हम दुश्मनों के उन ख़ुतूत से आगे नहीं बढ़ सकते जो उन्होंने हमारी बर्बादी के लिए खींच रखे हैं अगर कोई इस बात पर ग़ौर करे तो इसमें उसके लिए इबरत व नसीहत है। मश्रिक़ के सबसे बड़े मासूनी फ़र्द नें अपनी नशरयात 1923 में कहा है कि:

> ''फ़र्द और उसके एहल ख़ान्दान के बीच तुम पर फ़ूरीक़ डालना और उसकी ख़्वाहिश करना बेहद ज़रूरी है क्योंकि उसके ज़रिया तुम उनके अख़लाक़ को खींच लोगे इसलिए कि इंसान ख़ान्दानी तअल्लुक़ात को तोड़ने और हराम कामों व मामलात में पड़ने पर ज़्यादा झुकाव रखते हैं लिहाज़ा क़हवा ख़ानों का क़याम परागंदा सूरत पैदा करने और ख़ान्दानों को खींचने का उमदा काम कर सकते हैं।''

नसीहत नं. 16

घर वालों के हालात पर बारीकी से नज़र

घर वालों के हालात पर बारीकी से नज़र रखनी चाहिए। और हमारा मश्वरा है कि मंदरजा ज़ैल कामों पर ख़ास तौर से:

1. आपकी औलाद के दौस्त या उनकी सहेलियाँ कौन हैं?
2. क्या इससे पहले भी आप इनसे मुलाक़ात कर चुके हैं?
3. आपकी औलाद की घर के बाहर क्या मसरूफ़ियात हैं?
4. उनके बस्तों, अलमारियों, बिस्तरों और तकियों के नीचे या ग़िलाफ़ के अंदर क्या है?
5. बच्चों के कपड़ों की जेबों में क्या रहता है?
6. आपका बच्चा किसके साथ और कहाँ जाता है?
7. आपकी बेटी किसके साथ और कहाँ वक़्त गुज़ारती है?

बच्चों के दोस्त या उनकी सहेलियों से तआ़रुफ़ इसलिए ज़रूरी है कि कहीं उनकी मुलाक़ातें बदकिरदार लोगों से तो नहीं हो रही हैं क्योंकि दोस्तों के ज़रिया ही अक्सर बुरी आदतें पड़ती हैं। अख़लाक़ को ख़राब फ़िलमें, सिग्रेट नौशी और उसके बाद नौबत नशा आवर चीज़ों तक आ जाती है। नशा आवर चीज़ें आज इस दौर में करने वाली बच्चों तक पहुंच रही हैं। बदकिरदार लोग जिन्हें दीन की ख़बर है और न दुनिया की, वह गलियों और रेस्टोरेंट में बच्चों को ज़रूरी चीज़ें देते हैं जो कि नशाआवर होती हैं। लिहाज़ा अपने बच्चों को हमेशा होशयार रखना चाहिए कि कोई ऐसी चीज़ बाहर से न लें जो कि फ़्री कोई दे या किसी दोस्त के ज़रिये मिले।

इसी तरह बदकिरदार सहेलियों से भी बच्चियों को दूर रखने की ज़रूरत है। याद रखिए! जो हज़रात अपने बच्चों पर कड़ी नज़र नहीं रखते दरअसल वही उन्हें बर्बाद कर रहे हैं और क़यामत के दिन वह अल्लाह तआ़ला के दरबार में अपनी इस लापरवाही का जवाब दिए बग़ैर न हिल सकेंगे क्योंकि अल्लाह रब्बुल आलमीन हर ज़िम्मेदार से उसकी रिआ़या के बारे में सवाल करेगा।

यहाँ कुछ एहम नुक़ात भी मुलाहिज़ा फ़रमा लीजिए:

1. ज़रूरी है कि आप ख़ुफ़िया नज़र भी रखें ताकि वह फ़रार इख़्तियार

न कर सके।

2. ज़रूरी है कि औलाद का एतमाद आपको हासिल हो।
3. यह भी ज़रूरी है कि जब औलाद को आप डांट फ़टकार कर रहे हों तो उनकी उमरों का भी ख़्याल रखें और ग़लती व गुनाह की मिक़दार का भी।
4. एक दम बाल की खाल खींचने और सांसों को तंग कर देने वाला अमल भी न होना चाहिए मतलब यह है कि औलाद की निगरानी ज़रूरी है इसलिए जो भी उमदा और बेहतर क़दम हो उठाऐं।

हमसे एक शख़्स ने बयान किया कि उनके वालिद के पास कम्प्यूटर है जिसमें वह तारीख़ वार अपने बच्चों की ग़लतियाँ तफ़्सील से नोट करते हैं और जब किसी बच्चे से कोई ग़ल्ती होती है तो वह उसकी फ़ाइल खोलते हैं और उसके सामने उसकी पुरानी ग़ल्ती पेश करते हैं और नई ग़ल्ती को कम्प्यूटर में लिख लेते हैं।

दरहक़ीक़त ग़ौर तलब बात यह है कि वालिद की औलाद और उसका घराना कोई कम्पनी तो नहीं है और न ही बाप वह फ़रिश्ता है जिसको यह ज़िम्मदारी डाल दी गई हो कि वह लोगों की ग़लतियाँ लिखता फिरे। ऐसे बाप को औलाद की तर्बियत के उसूल मालूम करना और सिखाना चाहिऐं और मैं कुछ ऐसे अफराद को भी जानता हूँ जो औलाद के मामलात में बिल्कुल दख़ल अंदाज़ी नहीं करते और कुछ भी रोकते टोकते नहीं बल्कि वह कहते हैं कि ग़ल्ती तो ग़ल्ती है और गुनाह गुनाह है। जब ठोकर लगेगी और नुक़्सान होगा तो ख़ुद बख़ुद अक़्ल आ जाएगी।

यह भी एक ऐसा बेहूदा ख़्याल है जिसने औलाद को बेलगाम बना दिया है, यह ख़्यल दरहक़ीक़त मग़रिब का फ़लसफ़ा है और यह ऐसी मज़मूम आज़ादी है कि जिसने दूध पीते बच्चों से उनकी माओं को छीन लिया है।

और बाज़ लोग अपने बच्चे को इसलिए कुछ कहना गवारा नहीं करते कि वह बच्चा बुरा मान जाएगा उसकी नफ़सयात पर असर होगा, और बाज़ बच्चों को उनकी मर्ज़ी पर इसलिए छोड़ देते हैं कि बच्चे हैं और जवान हैं उनको अपनी जवानी और शबाब के मज़े लूट लेने दो क्योंकि जवानी तो दोबारा मिलने वाली नहीं।

क्या ऐसे वालिदैन को इस बात का ख़्याल तक नहीं रहा कि

कल क़यामत के दिन उनकी औलाद का दामन पकड़ कर अल्लाह तआ़ला के सामने कहेगी कि ''हमें गुनाह या मनमानी करने के लिए क्यों छूट दी थी?!

नसीहत नं. 17

बच्चों के लिए घर ही में एहतमाम करना

सवाल यह पेदा होता है कि किस तरह और किस क़िस्म का एहतमाम किया जाए?

इसके जवाब में चंद उसूल और ज़ाब्ते मुलाहिज़ा फ़रमा लीजिए:

कुरआ़न करीम हिफ़्ज़ करवाना और इस्लामी क़िस्से सुनाना।

वालिद के ज़ख़ीर-ए-आख़िरत में इससे उमदा बात क्या हो सकती है कि वह अपनी औलाद को शरह बसत के साथ कुरआन की तालीम दिलवाए और इसके लिए उसे जो भी ख़र्च करना पड़े, वालिदैन का किस तरह औलाद पर असर पड़ता है मुलाहिज़ा फ़रमाइए:

एक छोटे बच्चे ने सिर्फ़ जुमा को अपने वालिद को बार बार सूर: कहफ़ पढ़ते हुए सुना और सिर्फ़ सुन कर उसने सूर: कहफ़ को याद कर लिया, इसी तरह औलाद को इस्लामी अक़ाइद की तालीम देना जैसा कि अक़ीदा की हिफ़ाज़त के सिलसिले में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की हदीस है "احفظ الله يحفظك" अल्लाह तुम्हारी हिफ़ाहज़ करे तुम उसकी हिफ़ाज़त करो।

इसी तरह बच्चों को दुआओं और ज़िक्र व अज़्कार की शरई़ तालीम देना और सुबह व शाम बराबर पढ़ने वाली दुआऐं सिखाना, छींक की दुआ और उसके जवाब को सिखाना, सलाम करने के आदाब बताना इजाज़त लेकर दाख़िल होना यह सब छोटी छोटी अक़ीदे और ज़िंदगी को संवारने वाली दुआऐं हैं जिसका असर बच्चे पर होता है। इसके अलावा बच्चे छोटे छोटे अच्छे वाक़िआत और क़िस्सों से भी मुतास्सिर होते हैं जो उनको सुनाए जाऐं। नूह अलै० का तूफ़ान का क़िस्सा, इब्राहीम अलै० का क़िस्सा जो उन्होंने बुतों को तोड़ा, किस तरह तोड़ा और कैसी कैसी मुश्किलात उठाईं और आग में डाले गए। मूसा अ़लै० का क़िस्सा कि फ़िरओन से किस तरह नजात पाई और

क़ौम को लेकर चले तो दरिया में अल्लाह तआला ने किस तरह रास्ता बनादिया और फिर फ़िरओन किस तरह ग़र्क़ हुआ, यूनुस अल० का वाक़िआ कि वह किस तरह अल्लाह के हुक्म के बग़ैर चले गए तो मछली के पेट में रहे और फिर अल्लाह ने दुआ सिखाई तो निकल आए या अल्लाह ने मछली को हुक्म दिया कि यूनुस को कद्दू की बैल पर डाल दो, यूसुफ़ अलै० का वाक़िआ, मोहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सीरत पाक के वाक़िआत, हिजरत और दूसरी मुश्किलात, काफ़िरों से मुसलसल जंगें। जंग बदर व ओहद, ख़न्दक़ वग़ैरा के हालात, आपका अल्लाह पर कामिल भरोसा वाला वाक़िआ कि बताओ आपको कौन बचाएगा आपने कहा अल्लाह इसी तरह ऊँट वाला वाक़िआ सब बच्चों के ईमान को ताज़ा कर सकता है।

सालेहीन के वाक़िआत अबु बकर व उमर रज़ि० के वाक़िआत। उमर का वाक़िआ कि एक ऐसे ख़ैमे के पास पहुंचे जिसमें बच्चे रो रहे थे भूक से तड़प रहे थे।

सहाबा सहाबियात के वाक़िआत, उम्मेहातुल मोमिनीन के वाक़िआत, अस्हाबुल उख़दूद के वाक़िआत, बाग़ वालों का वाक़िआ जो सूरः नून में है, 3 अफ़राद का वाक़िआ जो ग़ार में फंस गए थे जिसे इमाम बुख़री ने अपनी सहीह में नक़ल किया है वग़ैरा वग़ैरा बहुत से उमदा उमदा और इबरत अंगैज़ वाक़िआत जिनको उम्दा अंदाज़ से बच्चों के सामने पेश करना चाहिए। इसके अलावा ऐसे वाक़िआत और क़िस्सों और कहानियों से बच्चों को बचाना चाहिए जो बच्चों की नफ़सियात पर असर अंदाज़ हों और उसके दिल में बुज़दिली व ख़ौफ़ पैदा करें। फ़िल्मी ऐक्टरों और ऐक्टर्स के वाक़िआत उनके नाम और उनके बारे में दूसरी मालूमात तो ख़ूब हैं अगर किसी मालूमात में कमी है तो वह असहाब रसूल के वाक़िआत हैं, सीरत मोहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दरख़्शाँ पहलूओं से नावाक़फ़ियत है। अल्लाह के रसूल के जानिसार सहाबा रिज़्वानुल्लाह अलैहिम अजमईन ने किस तरह अपनी जानों को क़ुर्बान किया है अपने रब की राह में।

क्या आपको अशरा मुबश्शरा के नाम याद हैं? क्या बच्चों को यह जानना ज़रूरी नहीं है कि वह दस मश्हूर सहाबी कौन से हैं जिन्हें

अल्लाह के रसूल ने दुनिया में ही जन्नत की बशारत दें दी थी?

हर ऐरे ग़ैरे के साथ बच्चों को बाहर निकलने से बचाने की कोशिश करनी चाहिए ख़ास तोर पर उन लोगों के साथ खेलने या घूमने पर पाबंदी लगाने की ज़रूरत है जिनके बुरे अख़लाक़ से वह मुतासिर हो रहे हैं और घर में वापसी पर गाली गलोच अपने साथ लाते हों चाहे वह पड़ौसी के बच्चे हों या किसी रिश्तेदार के! ऐसी हालत में बच्चों के लिए खेल व तफ़रीह का सामान घरों में ही मुहय्या कर देना चाहिए!

बच्चों के लिए अगर मयस्सर हो तो घर ही में खेलने का कमरा बना दिया जाए और खिलौने अच्छे क़िस्म के तर्बियत पाने वाले रख दिए जाऐं। बिल्ली, चमगदड़, शैर, कुत्ते वग़ैरा की तसावीर न रखें और न ऐसे अख़लाक़ बाख़्ता खिलौने जिनके ज़रिये बच्चों के लिए बुराई के दरवाज़े खुलते हों। आज खैल खिलौने के ज़रिया भी बच्चों पर ज़बर्दस्त असर पड़ रहा है। आज कल कम्प्यूटर में भी जुए की तरह के खेल आ गए हैं कि स्क्रीन पर एक खिलौना ज़ाहिर होता है फिर चार लड़कियाँ आती हैं और वह इससे खेलती हैं जब उनमें एक कामयाब हो जाती है तो इसके लिए इनाम में जो लड़की आती है वह अपना जिस्म अध खुला और बुरे मंज़र को लिए हुए आती जो इनाम पाने वाले को मिलती है और भी न जाने इस्लाम दुश्मन अफ़राद ने इस्लामी मआशरे को ख़त्म करने के लिए नए नए कितने खिलौने बना डाले हैं जो मुसलमानों के घरों में ग़ैर शऊरी तौर पर दाख़िल हो रहे हैं। उनसे बचना चाहिए।

लड़के और लड़कियों के बस्तरों में अलाहेदगी होनी चाहिए।

मुसलमानों के घरों में लड़कों और लड़कियों के सोने का ख़ास एहतमाम होना चाहिए। उन्हें अलग अलग बिस्तरों में सुलाना चाहिए और बहन भाइयों को भी अलग अलग बिस्तरों ही की आदत डालनी चाहिए!

-बच्चों के साथ मुहब्बत व महरबानी और हंसी मज़ाक़ का रवय्या भी अपनाया जाए जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का मामूल था कि आप बच्चों के सिरों को छूते और बच्चों

के साथ नर्मी व मुहब्बत से पेश आते थे, और बड़े प्यार से उन्हें पुकारते बुलाते थे, और उनमें जो सबसे छोटा होता फल वग़ैरा उसे पहले देते थे और कभी कभी उनको साथ लेकर भी जाते जैसा कि हसन व हुसैन रज़ि० के साथ किया करते थे। अबु हुरैरा फ़रमाते हैं:

كان رسول الله صلى ﷺ ليدلع لسانه فيبهش له (رواه ابو الشيخ في اخلاق النبى ﷺ)

कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपनी ज़बान मुबारक को हसन बिन अली को दिखाते थे जब बच्चा आप की सुर्ख़ ज़बान देखता तो उसे अच्छा मालूम होता और वह चूसना चाहता तो आप जल्दी से अंदर कर लिया करते थे।

यअ़ला बिन मुर्रा रज़ि० से रिवायत है कि वह नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ बाहर निकले किसी जगह खाने की दावत थी तो रास्ता में आपके नवासे हुसैन रज़ि० जब बच्चे थे तो खेल रहे थे तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जल्दी से लोगों के सामने आ गए फिर अपने दोनों हाथों को फैला दिया ताकि बच्चे को पकड़ें तो वह इधर उधर भागने लगे और आप उनको पकड़ते हुए हंसने लगे हत्ता कि आपने अपने एक हाथ से उन्हें पकड़ ही लिया फिर आपने एक हाथ उनकी थोड़ी पर रखा और और दूसरा हाथ सिर की गुद्दी पर और उनका बोसा लेते रहे। (बुख़ारी शरीफ़, अबदुल मुफ़रद)

नसीहत नं. 18

खाने पीने और सोने के औक़ात का मुक़र्रर करना

कुछ घरों के हालात तो होटलों जैसे होते हैं और जिस तरह होटल में हर वक़्त खाने पीने का निज़ाम चलता रहता है बिल्कुल ठीक इसी तरह घरों में भी वैसा ही होता है, कुछ बच्चे जिस वक़्त जी चाहे खाते हैं और जब चाहते हैं सोते हैं। रात भर जागते हैं और औक़ात ज़ाए व बर्बाद करते हैं यानी न कोई निज़ाम होता है और न कोई तरतीब। इसकी वजह से नज़्म व ज़ब्त का तसलसुल बिगड़ जाता है और बेकार मुशक़्क़त करनी पड़ती है और औक़ात भी ज़ाए होते हैं, और जो नफ्सानी बिगाड़ पैदा होता है वह इसके अलावा क्योंकि इंसानी नफ़्स में इससे पुख़्तगी पैदा नहीं होती। हम उज़्र पेश करने वालों से मअ़ज़रत के साथ कहते हैं कि इसमें सिर्फ़ बच्चे ही नहीं हैं जो कि मदरसों और यूनिवर्सिटियों के औक़ात को छोड़ कर वहाँ से निकल जाते हैं बल्कि इसमें मर्द, औरत और वज़ीफ़ा ख़ौर अफ़राद काम करने वाले और तमाम असहाबुल महलात वग़ैरा बराबर नहीं हैं और यह हालत एक जैसी रहती भी नहीं है क्योंकि कोई किसी वक़्त आता है और कोई किसी वक़्त। ताजिर का वक़्त दूसरा होता है और बच्चों की आमद का वक़्त दूसरा तमाम ख़ान्दान सुबह एक दस्तरख़्वान पर जमा नहीं हो सकता। लिहाज़ा अपने अपने फ़ुर्सत के औक़ात में वह खाते हैं।

यह हालत तमाम घरों की तो नहीं है कि वह स्कूल से जुदा वक़्त में निकलते हों और आते जाते भी मुख़्तलिफ़ वक़्त में हों, जो ख़ान्दान का बड़ा फ़र्द और मुरब्बी है उसको चाहिए कि वह अपने लोटने का बिल् मुक़र्रर करे और निकलते वक़्त घर वालों से इजाज़त ले कि मैं फ़लाँ वक़्त पहुंच जाऊँगा और छोटे बच्चे जब निकलें तो उनको भी इजाज़त लेकर जाने का पाबंद बनाऐं और आने का वक़्त मुक़र्रर करें क्योंकि छोटे बच्चे कम अक़्ल व कम समझ होते हैं और उनके मुतअल्लिक़ तश्वीश रहती है।

नसीहत नं. 19

घर से बाहर औरत के काम का वक़्त मुक़र्रर होना चाहिए।

इस्लामी शरीअ़त एक दूसरे से मिल कर मुकम्मल होती। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने औरतों को (الاحزاب: ۳۳) "وقرن فی بیوتکن" को हुक्म दिया है कि औरतें अपने घरों में क़रार हासिल करें यानी ठहरें।

वालिद और शौहर पर वाजिब किया है कि वह उन पर ख़र्च करें। और हक़ीक़त यह है कि औरत बग़ैर ज़रूरत के घर से बाहर काम ही नहीं कर सकती जैसा कि मूसा अलै० ने शुऐब अलै० जो कि एक नेक और सालेह फ़र्द थे उनकी दोनों बेटियों को एक चश्मा पर देखा था जो अपनी बकरियों को पानी पिलाने का इंतिज़ार कर रही थीं, तो उनसे सवाल किया "ما خطبکما قالتا لانسقی حتی یصدر الرعاء وابونا شیخ کبیر" (سورة القصص: ۲۳) मालूम किया कि तुम दोनों का क्या हाल है? तो दोनों लड़कियों ने कहा हम उस वक़्त तक पानी नहीं पिला सकतीं जब तक कि चरवाहे अपने रेवड़ों को पानी पिला कर फ़ारिग़ न हो जाएं और हमारे वालिद बहुत बूढ़े आदमी हैं।

यहाँ वालिद के बहुत बूढ़े होने की वजह से दोनों लड़कियाँ मजबूर थीं ताकि अपनी बकरियों को पानी पिलाने बाहर निकलें और घर से बाहर निकल कर कुछ काम धाम करें हत्ता कि जानवरों को पानी वग़ैरा भी पिलाऐं उसके बाद जब उन लड़कियों ने देखा कि हमारा सहारा एक शख़्स बन सकता है तो उन्होंने अपने वालिद से कहा:

قالت احداهما یا ابت استاجره ان خیر من الستاجرت القوی الامین (سوره القصص: ۲۶)

इनमें से एक लड़की ने अपने वालिद से कहा ऐ अब्बा जान आप इसको उजरत पर रख लें इसलिए कि जिसको आप उजरत पर रखेंगे वह ताक़तवर और अमानत दार है।

मतलब कह कि उस लड़की ने अपने वालिद से अपनी रग़बत व ख़्वाहिश का इज़हार इस तरह किया ताकि उसे घर ही में रहना पड़े और घर एक औरत ज़ात के लिए बेहतरीन पनाह गाह है, और ख़ुरूज से यानी घर से बाहर निकलने से जो मुशक़्क़त और तकलीफ़ एक औरत ज़ात को उठानी पड़ती है और काम की जो दुश्वारियाँ आती हैं इससे वह महफ़ूज़ रहे। जैसा कि इस ज़माने की दो बड़ी बड़ी आलमी जंगों के बाद जबकि मर्दों कमी हो गई तो कुफ़्फ़ार औरतों को बाहर निकालने पर मजबूर हुए और जंग से जो बर्बादी न हुई थी वह औरत के बाहर निकलने से हुई और इस तरह यहूदियों ने औरत की आज़ादी की जो चाल चली थी बड़ी हद तक कामयाब रही, अब वह उनके हुक़ूक़ की आवाज़ें बुलंद करते हैं औरत के मुकम्मल बिगाड़ का इरादा रखते हैं और आईंदा मुआशरा के बिगाड़ने की राह हमवार करते हैं ताकि औरत मुकम्मल तोर पर घर से बाहर निकल जाए और काम करे। इसके बरख़िलाफ़ इस्लामी मुआशरा उनके मुआशरा से बिल्कुल ही मुख़्तलिफ़ है ख़्वाह एक मुसलमान तंहा ज़िंदगी गुज़ारे या सोसायटी और मजमा के साथ रहे मुसलमान अपने घरों की ज़रूरतों को खुद पूरा करते हैं और उन पर दिल खोल कर ख़र्च करते हैं बल्कि कहा यह जाता है कि वह अपने ख़ान्दान और बीवी बच्चों के लिए ही कमाते हैं तो बेजा न होगा, मगर बराबर यह तहरीक उठ रही है कि औरत की आज़ादी परवान चढ़े बल्कि यह मुतालबात बार बार दुहराए जा रहे हैं कि औरत को घर से बाहर की आज़ादी दी जाए जबकि इस्लामी सोसाईटी को इस क़िस्म के अमल की ज़रूरत ही नहीं है और इस्लाम ने उसे मुकम्मल तहफ़्फ़ुज़ अता किया है।

जबकि अख़बारात इस क़िस्म की ख़बरों से मुसतक़िल भरे होते हैं फ़लाँ जगह औरतों के लिए मख़्सूस है जबकि इस काम को करने वाले भी मर्द हैं। हाँ अगर बहुत से ज़रूरी मुक़ामात पर हम भी इस बात के क़ाईल हैं कि औरत को वहाँ शरई परदा के साथ काम करना चाहिए जैसे तालीम जहाँ कि बच्चियों को तालीम दी जाती हो, बीमारी के मुक़ामात, ज़च्चा बच्चा की जगहों में औरतों के इलाज व मआलजा के लिए एक बड़ी ज़रूरत है अगर उनके अलावा दूसरे मुक़ामात में, होटलों में, दुकानों में, आफ़िसों में औरतें काम के लिए निकलती हैं तो यह ग़ैर शरई अमल है। औरतों की आज़ादी का असर यह हुआ है कि

अब औरतें भी नौकरियों के लिए चक्कर लगाती हैं और बिला ज़रूरत ही नौकरियाँ तलाश करती फिरती हैं अगर किसी ऐसी जगह उनको नौकरी मिल जाए जो उनके लाइक़ नहीं तो फिर बड़े फ़ितना व फसाद का दरवाज़ा खुल जाता है, इस्लामी फिक्र और यौरपी फिक्र में ज़बर्दस्त टकराव है जबकि यौरपी फ़िक्र यह चाहती है कि औरत मुकम्मल काम (Job) पर रहे और इस्लामी फ़िक्र व मुआ़शरा यह चाहता है कि औरत अल्लाह के एहकामात के मुताबिक़ "وقـرن فـى بيـوتكن" कि तुम अपने घरों को अपना मुस्तक़िल मुसतक़र बना लो, इसकी मिसदाक़ बन जाऐं। और बहुत ही ज़रूरत हो तो अपनी ज़रूरतों की तकमील के लिए निकलें न कि नौकरियों के लिए और दर दर की ठोकरें खाने के लिए "उन्हें सिर्फ़ इस बात की इजाज़त दी गई है कि वह सिर्फ़ अपनी ज़रूरतों की तकमील के लिए ही निकलें।"

और इलमानी व यूरपी तर्ज़े फ़िक्र यह है कि औरत हर हालत में घर से बाहर ही रहे और घूमती फिरती रहे।

इंसाफ़ की बात यह है कि औरत का शौहर फ़ोत हो चुका है और उसकी ज़रूरतें सामने हैं और ख़ान्दान की मौत व हयात का मसला है, बाप भाई आजिज़ व कमज़ोर हैं और उसका कोई ताक़तवर सहारा नहीं है तो औ़रत परदा का एहतमाम करते हुए काम कर सकती है।

कुछ मुल्कों में तो यह हाल हो गया है कि अगर लड़की मुलाज़मत नहीं करती तो उसका पैग़ाम भी नहीं आता है क्योंकि मर्दों का मिज़ाज बन गया है कि वह सरविस वाली लड़की को ही बीवी बनाऐंगे या यह होता है कि जब बात चीत और पैग़ाम रसानी होती है तो लड़की या उसके घर वाले कहते हैं कि वह काम करेगी वग़ैरा वग़ैरा।

ख़ुलास-ए-कलाम यह हुआ कि औरत इंतिहाई ज़रूरत या इस्लामी हदफ़ हो तो काम करेगी वरना नहीं अगर औरत को औरतों में इस्लामी दावत का काम करना है और उसको घर से निकलना है तो निकले गी या कोई ऐसी औरत है जो बाल बच्चे वाली नहीं है और घर में उक्ता जाती है तो वह इस्लामी मुआ़शरा और इस्लामी तालीम के फैलाव के लिए निकल सकती है।

घर से बाहर औरत को कैसी जगहों में काम नहीं करना चाहिए और कौन सी ज़िम्मदारियाँ उससे छिन जाती हैं

बहुत से ऐसे मुक़ामात हैं जहाँ जैसे मर्द और औ़रत एक साथ काम करते हैं और तन्हाई हासिल होती है जहाँ वह एक दूसरे से पहचान बनाते हैं, या वह खूब बन संवर कर जाए, ग़ैरों को दिखाने के लिए ज़ैब व ज़ीनत का इज़हार करे और फिर इसका अंजाम इंतिहाई फ़हश काम पर ख़त्म होता है।

औरत अपने शौहर और अपने बच्चों का हक़ बराबर अदा नहीं कर पाती और बहुत से काम बेकार पड़े रहते हैं और जिसकी वजह से बीवी और शौहर के बीच झगड़े हो जाते हैं यह बहुत एहम मौज़ू है जो आम तोर से सर्विस करने वाली औरत के घर वाक़े होता है।

और इस तरह कुछ औरतों के ज़हन में मर्दों के क़व्वाम (निग्राँ) होने का तसव्वुर कम हो जाता है और वह समझती हैं कि मर्द क़व्वाम नहीं हो सकता हम भी तो यह काम कर सकती हैं, वह यह समझती हैं कि जिस तरह मर्दों के पास सर्टिफिकेट हैं उनके पास भी तो इसी तरह के हैं बल्कि औरत बसा औक़ात इससे भी ज़्यादा बड़ा सर्टिफ़िकेट लिए हुए होती है और कभी वह जो वज़ीफ़ा पाती है अपने शौहर के वज़ीफ़ा से भी ज़्यादा होता है। फिर वह अपनी ज़रूरयात की तकमील के लिए अपने शौहर को ज़िम्मेदार नहीं समझती और एक तरह का इसमें एतमाद पैदा हो जाता है कि मैं खुद अपनी किफ़ालत कर सकती हूँ। फिर वह शौहर की इताअ़त और किसी हुक्म को मानना अपने लिए ऐब समझती है और फिर घर की बुनियाद उखड़ना शुरू हो जाती है और घर के मामलात में ज़लज़ला पैदा हो जाता है और फिर उनके बीच झगड़े शुरू हो जाते हैं मगर अल्लाह जिनके साथ इरादा-ए-खै़र करे तो वह उससे बच जाते हैं और उनमें किसी कि़स्म का इख़्तिलाफ़ नहीं होता मगर अक्सर ऐसा होता है कि घर के इख़राजात बढ़ जाते हैं और यह मुश्किलात इस काम करने वाली औरत के लिए और बढ़ जाती हैं जबकि शौहर फिर उस पर अपना माल ख़र्च नहीं करता वह कहता है तुम्हारे पास तो रक़म है

लिहाज़ा इससे अपनी ज़रूरयात ख़रीद लो।

☆ औरत पर नफ़्सयाती दबाव बढ़ जाता है और जिस्मानी तक्लीफ़ भी। क्योंकि औरत का ज़हन औरत की तबीयत की वजह से उसे कुबूल नहीं करते।

☆ इस क़ायदे और नुक़सान को ज़िक्र करने के बाद हम कहते हैं कि जो भी औरत काम करे उसे सबसे पहले अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करना चाहिए और अपने मसअला को शरीअ़त की तराज़ू में तोलना चाहिए और इन हालात का गहराई से जाइज़ा लेना चाहिए जिसमें इसको निकल कर काम करना है, कि इसके लिए जाइज़ है या नहीं। मगर आज दुनियावी मसलेहतों ने हक़ का रास्ता तंग कर दिया है और उसे इख़्तियार करने में अवाम को ख़ासी दुश्वारी का सामना करना पड़ रहा है।

☆ औरत को चाहिए कि वह अल्लाह का तक़्वा और शौहर की इताअ़त का जज़्बा पैदा करे, जब शौहर न चाहे और कोई ऐसी मसलेहत हो कि वह उसको काम करने से मना करे तो उसे रुक जाना चाहिए क्योंकि शौहर की फ़रमांबरदारी में ही उसके लिए ख़ैर है।

☆ अगर औरत खुद देखे के उसका घर बर्बाद हो रहा है तो खुद रुक जाए और शौहर पर भी लाज़िम है कि वह इंतिक़ामी जज़्बात से दूर हो जाए उनको छोड़ दे और बीवी का माल बग़ैर हक़ के बिल्कुल इस्तेमाल न करे बल्कि अपनी कमाई अपनी बीवी और बच्चों पर खुश दिली से सर्फ़ करे।

नसीहत नं. 20

घर के राज़ों की हिफ़ाज़त करना

राज़ों का खोलना चंद तरीक़ों पर होता है उनसे बचना चाहिए मसलनः

☆ जो बात कान लगा कर सुन ली है और पोशीदा बात है तो उसको न फैलाना चाहिए।

☆ मियाँ बीवी के राज़ों को ज़ाहिर न करना चाहिए।

☆ किसी भी राज़ का किसी भी तरह ज़ाहिर करना ग़लत है जिसमें घर का या किसी भी फ़र्द का नुक़सान हो रहा है।

पहले मसअला की दलील रसलूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का फ़रमान है:

ان من شر الناس عندالله منزلة يوم القيامة الرجل يفضى الى امرأته وتفضى اليه ثم ينشر سرها (رواه مسلم: ۱۵۷/۴)

अल्लाह के नज़दीक लोगों में सबसे बदतरीन बाएतबार दरजा क़यामत के दिन वह लोग होंगे कि आदमी अपनी बीवी की आग़ोश में जाता है और वह उसके आग़ोश में जाती है फिर वह उसके राज़ को अफ़शाँ व ज़ाहिर करे।

यानी बीवी से मुबाशरत या जिमाअ़ का तज़किरा और उस कैफ़ियत को दोस्तों से मज़ा ले ले कर बयान करना मना है।

जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः

وقد افضى بعضكم الى بعض (سورة النساء: ۲۱)

और हक़ीक़त यह है कि तुम में से बाज़ बाज़ से ज़ाहिर करे।

हुर्मत की मज़ीद दलील असमा बिन्त यज़ीद की हदीस है कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास थीं और मर्द व औ़रतें भी आपके पास बैठे हुए थे तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

لعل رجلا يقول ما يفعل باهله ولعل امرأة تخبر بما فعلت مع زوجها

शायद मर्द वह सब कुछ कह देता है जो वह अपनी बीवी के साथ करता और शायद औरत भी उन तमाम चीज़ों की ख़बर कर देती है जो वह अपने शौहर के साथ करती है।

तो क़ौम के लोग ख़ामोश रह गए तो मैंने कहा हाँ ऐ अल्लाह के रसूल बेशक औरतें ऐसा करती हैं और मर्द भी ऐसा करते हैं तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

فلا تفعلوا فانما ذلک مثل الشیطان لقی شیطانة فی طریق فغشیها والناس ینظرون (رواه احمد)

लिहाज़ा तुम लोग ऐसा न करो यानी उसकी मिसाल ऐसी है जैसे शैतान किसी शैतान औरत से किसी रास्ता में मिलता है फिर वह उसको ढाँप लेता है और लोग देख रहे होते हैं।

अबू दाऊद की एक रिवायत में है कि:

هل منكم الرجل اذا اتی اهله فاغلق علیه بابه والقی علیه ستره واستتر بستر الله

क्या तुम में से कोई आदमी जबकि वह अपनी बीवी के पास आता है फिर अपने आप अपना दरवाज़ा बंद कर लेता है और अपने ऊपर अपना पर्दा खींच लेता है ताकि अल्लाह से भी पर्दा हो सके।

तो लोगों ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल उसके बाद आप ने फ़रमाया:

ثم یجلس بعد ذلک فیقول فعلت کذا، فعلت کذا، फिर किसी मजलिस में उसके बाद बैठ कर कहता है कि मैंने ऐसा ऐसा किया। तो लोग ख़ामोश हो गए।

फिर आप औ़रतों की तरफ़ मुतवज्जह हुए फिर फ़रमाया:

هل منكن من تحدث؟ है तुम में से कोई जो बयान करे तो औ़रतें भी ख़ामोश हो गईं, तो अचानक बनी कअ़ब की एक दो शीज़ा अपने दोनों घुटनों में से एक पर खड़ी हो गई ताकि क़द्रे लम्बी हो जाए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उसको देख लें। और उसकी

बात सुन लें, तो उसने कहा ऐ अल्लाह के रसूल बेशक मर्द इस क़िस्म की बात चीत करते हैं और औ़रतें भी इस क़िस्म की बात चीत करती हैं तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

هل تدرون ما مثل ذلک؟ انما مثل ذلک مثل شيطانة لقيت شيطانا فی السكة فقضی حاجته والناس ينظرون اليه (سنن ابوداؤد ۲/۶۲۷)

क्या तुम जानते हो उसकी मिसाल क्या है? दरहक़ीक़त उसकी मिसाल उस शैतान की मिसाल है जो किसी शैतान से गली में मिलती है फिर वह उससे अपनी हाजत पूरी करता है और लोग उसकी तरफ़ देख रहे होते हैं।

☆ दूसरा एहम मसअ्ला मियाँ बीवी के झगड़ों का घर से बाहर आना भी ख़तरनाक बात है जो कि सिर्फ़ घर में होता है और जब वह बाहर अया तो मुश्किलात दर मुश्किलात पैदा हो जाती हैं और बाहर के लोगों का दख़ल बढ़ जाता है और फिर अक्सर यह होता है कि मामलात सुलझने के बजाए उलझते चले जाते हैं।

फिर दोनों के बीच मसअ्ला उस शख़्स के ज़रिये सुलझाने की कोशिश की जाती है जो उनमें सबसे ज़्यादा क़रीब होता है फिर कोशिश यह होती है कि जल्द ही दोनों किसी न किसी सुलह तक पहुंच जाएें फिर अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ अ़मल करना चाहिए। यानी एक उनका आदमी और अपना आदमी बिठाते हैं जैसा कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

فابعثوا حكما من اهله وحكما من اهلها ان يريدا اصلاحا يوفق الله بينهما (سورة النساء ۳۵)

फिर मर्द के एहल से एक फ़ैसला और औ़रत के एहल से एक करने वाला भेजो अगर दोनों इस्लाह चाहते हों तो अल्लाह उनके बीच तौफ़ीक़ पैदा कर देता है।

☆ तीसरा मसअ्ला भी घर के लिए बहुत नुक़सान दह होता है इसमें किसी एक की भी छोटी सी खुसूसियत का बाहर आ जाना

तक्लीफ़ दह मरहला बन जाता है और यह किसी भी सूरत में जाइज़ नहीं है।

इसलिए भी कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के क़ौल "لاضـرر ولاضـرار" के तहत आ जाता है न किसी से नुक़्सान पाओ न किसी को नुक़्सान दो। (अहमद)

इस क़िस्म की मिसाल अल्लाह के क़ौल की तफ़्सीर में वारिद है। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया:

ضـرب الـلـه مثلا للذين كفروا امرأة نوح وامرأة لوط كانتا تحت عبدين من عبادنا صالحين فخانتهما (سورة التحريم: ١٠)

अल्लाह तआ़ला ने एक मिसाल काफ़िरों के लिए नूह की बीवी और लूत की बीवी की बयान की है कि दोनों हमारे नेक बन्दों के मातहत थीं मगर दोनों ने ख़्यानत की।

इब्ने कसीर रह० इस आयत की तफ्सीर करते हुए फ़रमाते हैं:

नूह की बीवी नूह अलै० के भेदों और राज़ों को अफ़्शाँ क्या करती थी वह इस तरह कि जब भी कोई नूह अलै० पर ईमान लाता तो वह क़ौम के सरकशों और ज़ालिमों को उसकी ख़बर कर दिया करती थी और लूत की बीवी का हाल यह था कि जब भी लूत अलै० के घर कोई शख़्स महमान बनता तो वह शहर वालों को जो कि बुरा फ़अ़ल और इग़लाम बाज़ी किया करते थे उनको बता दिया करती थीं कि आज फ़लाँ शख़्स मेहमान है आओ और उसके साथ बुरा अमल करो।

नसीहत नं. 21

घर में अख़लाक़ियात का फैलाव हो

वह इस तरह कि नर्मी और खुश अख़लाक़ी से पेश आया जाए। हज़रत आ़ईशा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

اذا اراد اللہ عزوجل . اهل بيت خيرا ادخل عليهم الرفق (امام احمد ٦/ ٧١)

अल्लाह तआ़ला जब किसी घर वालों के लिए ख़ैर चाहता है तो उन पर नरमी और खुश़ खुल्क़ी दाख़िल कर देता है।

और एक रिवायत में है:

ان اللہ اذا احب اهل بيت أدخل عليهم الرفق (صحيح الجامع: ١٧٠٤)

बेशक अल्लाह तआ़ला जब किसी घराने से मुहब्बत करता है तो उन पर नरमी को दाख़िल कर देता है।

यानी एहले ख़ाना एक दूसरे से निहायत नरमी और हुस्न सुलूक से पेश आते हैं अगर आप आपसी मामला ऐसा देखें तो समझ लीजिए कि इसमें उस घराने की सआ़दत और नैक बख़्ती है। अगर मियाँ बीवी के बीच नरमी और खुश गुफ़्तारी हो तो बहुत नफ़ा बख़्श होती है और औलाद के साथ मीठा अंदाज़ मीठे फल लाता है क्योंकि उसकी वजह से खुरदुरा पन और माहौल में खुश्की नहीं पैदा होती, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

ان الله يحب الرفق ويعطى على الرفق مالا يعطى على العنف ومالا يعطى على سواء (مسلم: ٢٥٩٣)

बेशक अल्लाह तआ़ला मेहरबानी को पसंद करता है और जो कुछ वह महरबानी से देता है सख़्ती से नहीं देता और उनके अलावा पर भी कुछ नहीं देता।

नसीहत नं. 22

घर वालों की घरेलू काम में मदद करना

बहुत से लोग ऐसे होते हैं जो घरेलू काम को पसंद करते हैं और कुछ का ख़्याल यह होता है कि इसके ऐसा करने से उसकी क़द्र व मंज़िलत में कमी आ जाती है और घर वाले उसकी महनत का मज़ाक़ उड़ाते हैं लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का आलम क्या था यह भी मुलाहिज़ा फ़रमा लीजिए:

كان يخيط ثوبه، ويخصف نعله ويعمل ما يعمل الرجال فى بيوتهم (احمد المسند ٦/١٢١)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपने कपड़े सीते थे और अपने जूतों को साफ़ सुथरा भी करते थे और मर्द लोग अपने घरों में जो काम करते हैं तमाम काम करते थे।

आप की एहलिया मोहतरमा माई आ़ईशा सिद्दीक़ा से जब सवाल किया गया कि आपका घर में क्या अमल होता था? तो उसके जवाब में यह बताया कि जो कुछ मैंने देखा है वह बता रही हूँ:

كان بشراً من البشر يفلى (ينقى) ثوبه ويحلب شأته ويخدم نفسه (احمد المسند ٦/٢٥٦)

कि आप इंसानों में एक इंसान थे अपने कपड़े धोते थे और अपनी बकरी का दूध भी दोहते थे और उसकी ख़िदमत भी ख़ुद करते थे।

मज़ीद दरयाफ़्त किया गया कि माई आ़ईशा बताईये इसके अलावा आप घर में और क्या क्या काम करते थे? तो फ़रमाया:

كان يكون فى مهنه اهله (خدمة اهله) فاذا حضرت الصلاة خرج الى الصلاة (البخارى ٢/٣)

आप अपने घर वालों की ख़िदमत किया करते थे जिस वक़्त नमाज़ का वक़्त हो जाता तो नमाज़ के लिए निकल जाया करते थे।

अगर हम अख़लाक़े हमीदा को अपना लें तो बहुत से फ़ायदे हमें बाआसानी हासिल होंगे मसलन:

1. यह कि हम अपने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की इक़्तिदा करने वालें होंगे।
2. हम अपने एहल यानी बीवी बच्चों की मदद करने वालों होंगे।
3. हम तावाज़ोअ़ व इंकिसारी महसूस करेंगे और तकब्बुर से दूर होंगे।

कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो अपनी बीवी से फ़ौरन खाना लाने का मुतालबा करते हैं जबकि हांडी चूल्हे पर ही होती है, बच्चा चींखता रहता है वह दूध पीना चाहता है लेकिन हज़रत शौहर ज़रा बच्चा को पकड़ नहीं सकते और न खाने का थोड़ी देर इंतिज़ार करते हैं यह अहादीस उन लोगों के लिए बाइसे नसीहत हो सकती हैं और इन बातों से उनकी ज़िंदगियों में तबदीली आ सकती है।

नसीहत नं. 23

घर वालों से नरमी का सुलूक

घर वालों से नरमी का सुलूक और हंसी मज़ाक़ भी ज़रूरी है। घर में अगर कोई बाल बच्चों के साथ मुहब्बत महरबानी, नरमी वाला सुलूक इख़्तियार करता है तो माहोल ख़ुशगवार और उलफ़त व मोहब्बत और ख़ुशी की माहोल नज़र आता है, इसी वजह से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत जाबिर को नसीहत की कि वह बाकरा यानी कुंवारी लड़की से शादी करें और इस पर उभारा भी:

فهلا بكرا تلاعبها وتلاعبک وتضاحكها وتضاحک (متفق عليه)

किसी बाकरा कुंवारी लड़की से क्यों शादी न की कि तुम उसके साथ खेलते और वह तुम्हारे साथ खेलती और तुम उसे हंसाते और वह तुम को हंसाती।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

كل شئى ليس فيه ذكر الله فهو لهو ولعب الا اربع ملاعبة الرجل امرأته (النسائى)

हर वह चीज़ जिसमें अल्लाह का ज़िक्र न हो वह ख़राब है मगर चार चीज़ों के अलावा और उसमें से ही आदमी का अपनी बीवी के साथ खेल कूद करना है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपनी बीवी आ़ईशा सिद्दीक़ा रज़ि० के साथ निहायत नरमी का इज़हार किया करते थे और आप उनके साथ गुस्ल भी किया करते थे जैसा कि आप फ़रमाती हैं:

> كنت اغتسل انا ورسول الله ﷺ من اناء بينى وبينه واحد فيبادرنى حتى اقول دع لى دع لى، قالت وهما جنبان (مسلم شريف النووى : ۶/۴)
>
> मैं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम एक ही बर्तन से जो कि मेरे और आपके बीच होता गुस्ल किया करता थे आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अक्सर मुझसे आगे बढ़ जाते तो मैं कहती मुझे छोड़ दो मुझे छोड़ दो।

बच्चों के साथ भी आपका रवैया बड़ा नरम रहा करता था, यह बहुत ज़्यादा मशहूर है कि आप हसन व हुसैन रज़ि० पर बहुत ज़्यादा महरमान थे जैसा कि गुज़िश्ता सफ़हात में हम ने बताया है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का आलम यह था कि जैसे आप बच्चों में पहुंचते बच्चे खुश हो जाया करते थे, जब आप सफ़र से लौटते तो बच्चे लपक लपक कर आपका इसतक़बाल किया करते थे जैसा कि सहीह मुस्लिम की हदीस में है:

> كان اذا قدم من سفر تلقى بصبيان اهل بيته
>
> जब आप सफ़र से आते तो घर के दोनों बच्चों से मिलते थे बल्कि:

अब्दुल्लाह बिन जाफ़र फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का आलम यह था कि उनको चिपका लिया करते।

अब्दुल्लाह बिन जाफ़र फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि

वसललम जब सफ़र से आते थे तो मुझे उठा लेते थे पस मुझे और हसन या हुसैन को उठा लेते कहा कि कभी हम से किसी को अपने दोनों हाथों में सामने और दूसरे को पीठ पर उठाए हुए मदीने में दाख़िल होते।

आप बाज़ ग़मज़दा घरों का मुआईना करेंगे तो उसमें सच्चा मज़ाह व मज़ाक़ न पाएंगे और न ही किसी क़िस्म की रहमत व बर्कत और मुहब्बत व नरमी, जो शख़्स यह समझता है कि औलाद को चूमने से उसकी हैबत और रोअ़ब में कमी आ जाती है उसे इस हदीस को पढ़ना चाहिए और अपने रवैये में तबदीली लानी चाहिए।

अबु हुरैरा रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हसन बिन अली से प्यार करते और उनको चूमते जबकि अक़रअ़ बिन हाबिस अल्तीमी आपके पास बैठे हुए थे तो अक़रअ़ ने कहा कि मेरे दस बच्चे हैं में उनमें से किसी को नहीं चूमता तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उनकी तरफ़ देखा और फ़रमाया:

"مَن لَا يَرْحَمُ لَا يُرْحَمُ" जो शख़्स दूसरों पर रहम नहीं करता, उस पर भी रहम नहीं किया जाता।

नसीहत नं. 24

घर से बुरे अख़लाक़ को उखाड़ डालना

अगर घर के किसी फ़र्द में झूट या चुग़ल ख़ोरी जैसी बुरी आदतें और उससे घर में बुराई फैल रही हो तो ज़रूरी है कि घर से इस क़िस्म के बुरे अख़लाक़ को ख़त्म किया जाए। बाज़ लोग यह समझते हैं कि ऐसे बच्चों को या लोगों को जिस्मानी सज़ा काफ़ी होती है और उनका यह ही एक वाहिद ईलाज है इस सिलसिले में मंदरजा ज़ैल हदीस सहीह राहनुमा हो सकती है। आईशा सिद्दीक़ा रज़ि० फ़रमाती हैं:

كان رسول الله ﷺ اذا اطلع على احد من اهل بيته كذب كذبة لم يزل معرضا عنه حتى يحدث توبةً (المسند امام احمد ١٥٢/٦)

कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब अपने घर वालों में से किसी को झूट बोलता या बोलती हुए पाते तो उससे उस वक़्त तक नफ़रत करते जब तक कि वह तौबा नहीं कर लेता।

घर के बड़ों के लिए यह हदीस मुकम्मल रहनुमाई फ़रमा रही है, वह लोग जो जिस्मानी जज़ा व सज़ा को बहतर समझते हैं उन्हें अपने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के तरीक़ा पर ग़ौर व फ़िक्र करनी चाहिए और इसमें कोई शक नहीं कि बहतर तरीक़ा रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का ही है लिहाज़ा इसी को इख़्तियार करने में उम्मत की भलाई है।

नसीहत नं. 25

एक कोड़ा घर में लटकाए रखो

उम्दा तर्बियत का एक तरीक़ा यह भी है कि घर के किसी हिस्से में एक कोड़ा लटका रहे या लकड़ी की छड़ी लटकी रहे क्योंकि एक दूसरी रिवायत में यह मिलता है कि जब घर में कोड़ा या लकड़ी की छड़ी लटकी होगी तो यह भी अदब व अख़लाक़ सिखाने का एक ज़रिया बनेंगी।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

علقوا السوط حيث يراه اهل البيت فانه آداب لهم (طبرانی)

एक कोड़ा लटकाए रखो जहाँ उसे घर वाले देखते रहें इसलिए कि वह उनके लिए अदब है।

किसी सज़ा देने वाली चीज़ का लटका हुआ दिखाई देना भी किसी बुरे अमल के करने वाले को बुरे अमल से रोक सकता है क्योंकि उसके दिल में यह ख़ौफ़ हो सकता है कि अगर मैंने यह काम किया तो यह लटकी हुई चीज़ मुझे सीधा करेगी तो इस तरह वह बुरे अख़लाक़ और बुरी बातों से गुरेज़ करेगा और अख़लाक़ फ़ाज़िला की तरफ़ बढ़ेगा।

अंबारी ने कहा कि उसके लटकाने से यह मुराद नहीं है कि उससे पिटाई की जाए इसलिए कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मारने का हुक्म ही नहीं दिया बल्कि मुराद यह है कि बेअदबी हद दर्जा न बढ़े। (तबरानी 1/344)

अदब व तादीब के लिए मार ही असल चीज़ नहीं है और न ही उसे इख़्तियार किया जा सकता है इसके अलावा भी अदब सिखाने के बहुत से तरीक़े हैं जिनके ज़रिये वाजिब फ़रमांबरदारी पर उभारा जा सकता है जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है:

واللاتی تخافون نشوزهن فعظوهن واهجروهن فی المضاجع واضربوهن (النساء: ٣٤)

और जिन औरतों की नाफ़रमानी से तुम डरते हो तो पहले तुम उनको नसीहत करो और फिर उनकी ख़्वाबगाहों को छोड़ दो और अगर फिर भी बाज़ न

आएं तो उनको हलकी मार मारो।

इसी तर्तीब से हदीस शरीफ़ में भी है:

مروا اولادکم بالصلاۃ وهم ابناء سبع سنين واضربوهم عليها وهم ابناء عشر (سنن ابو داؤد: ۱/۲۳۴)

अपने बच्चो को नमाज़ का हुक्म दो जब वह सात साल के हों और दस साल के हो जाएं और नमाज़ न पढ़े तो उनको मारो।

बग़ैर सबब के पिटाई करते रहना दुश्मनी का सबब बनता है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक औ़रत को नसीहत की कि उससे शादी न करो क्योंकि वह अपने कंधे से लाठी रखता ही नहीं। लेकिन बाज़ लोग बिल्कुल मार ही ना पसंद मानते हैं और तर्बियत के सिलसिले में कुफ़्फ़ार की पैरवी करते हैं वह ग़ल्त नज़रया रखते हैं क्योंकि वह शरीअ़त के दलाईल की सरासर मुख़ालफ़त करते हैं।

नसीहत नं. 26

घर की बुराइयाँ

औ़रत के लिए घर में ग़ैर महरम रिशतेदारों का दाख़ला मना होना चाहिए जबकि शौहर मौजूद न हो।

नसीहत नं. 27

जब किसी रिश्तेदार से मुलाक़ात के लिए उसके घर जाएं तो औ़रतें अलग परदा में औ़रतों से मुलाक़ात करें मर्दों के साथ मिल कर न बैठें।

नसीहत नं. 28

ड्राईवरों और घर में काम करने वाली ख़ादिमों से बचते रहें और घर के मर्द और औ़रतें दोनों ही होशियार रहें।

नसीहत नं. 29

हीजड़ों को घरों से निकाल बाहर करें यानी उन्हें घरों में दाख़िल न होने दें।

नसीहत नं. 30

डिश ऐंटीना और मीडिया के ख़तरों से बचें। डिश के ज़रिया जिस तरह की बेहयाई के मनाज़िर रात दिन टेलीविज़न पर दिखाए जा रहे हैं वह मुहज़्ज़ब व बाअख़लाक़ मआशरे के लिए ज़बर्दस्त ख़तरा हैं। उनके बुरे असरात जिस तरह नई नसल के लड़के और लड़कियों पर पड़ रहे हैं वह भी किसी अक़्लमंद से मख़्फ़ी नहीं। इन हालात में अपनी तहज़ीब व तमद्दुन, अपने घर की इज़्ज़त व आबरू और अपने दीनी इक़दार को बचाने के लिए ज़रूरी है कि हम डिश ऐंटीना की लानत से अपने घरों को पाक व साफ़ रखें।

नसीहत नं. 31

टेलिफ़ोन की बुराई से बचें। टेलिफ़ोन वक़्त की एहम ज़रूरत है मगर कभी कभी इसका ग़लत इस्तेमाल घर की इज़्ज़त व आबरू को दाव पर लगा देता है इसलिए ज़रूरी है कि घर की ख़्वातीन और बहु बेटियों को ग़ैर महरम मर्द से गुफ्तुगू के आदाब सिखाए जाऐं।

अल्लाह तआ़ला ने ग़ैर महरम से गुफ़्तुगू का तरीक़ा यह बताया है:

ان تقيتن فلا تخضعن بالقول فيطمع الذى فى قلبه مرض وقلن قولا معروفا (سوره احزاب آيت:۳۲)

अगर तुम परहेज़गारी करो तो नरम लहजे में बात मत करो कि जिसके दिल में रोग है वह कोई ख़्याल करे। हाँ क़ायदे के मुताबिक़ कलाम करो।

यानी यह रूखा पन सिर्फ़ लहजे की हद तक ही हो, ज़बान से ऐसा लफ़्ज़ न निकालना जो मारूफ़ क़ायदे और अख़्लाक़ के ख़िलाफ़ हो।

घर की बड़ी ख़्वातीन की ज़िम्मेदारी है कि वह अपनी बच्चियों पर पूरी नज़र रखें उनकी दीनी तर्बियत करें और उन्हें किसी भी बेहयाई और फ़हश काम के क़रीब न जाने दें। पर्दा की एहमियत व ज़रूरत पर ख़ास ध्यान दें।

इस तरह टेलिफ़ोन जैसी मुफ़ीद चीज़ की बराुई से अपने घर को महफ़ूज़ रखा जा सकता है।

नसीहत नं. 32

कुफ़्फ़ार के बातिल दीन और उनके माबूदों और बुतों की जो भी तसावीर या इशारा वग़ैरा भी मिले उसे घर से दूर रखें।

नसीहत नं. 33

जानदारों की जसवीरें घरों में न लटकाऐं। जैसे जानवरों की यानी कुत्ते और बिल्लियों की और इसी तरह से फिल्मी ऐक्टरों या पहलवानों की। याद रहे रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की हदीस के मुताबिक़ उस घर में रहमत के फ़रिश्ते दाखिल नहीं होते जिसमें तसावीर होती हैं।

नसीहत नं. 34

अपने घरों में सिग्रेट नौशों को सिग्रेट पीने से मना करें और लिख दें कि स़िग्रेट पीना और पिलाना मना है। महमानों की ख़ातिर करें लेकिन अपने बच्चों से सिग्रेट वग़ैरा उन्हें न मंगा कर दें!

नसीहत नं. 35

अपने आपको घरों में कुत्तों के पालने और उनको चूमने चाटने वाले अमल से बचाऐं।

नसीहत नं. 36

अपने घरों को ग़ैर ज़रूरी और फ़ुज़ूल डेकोरेट करने से बचें। डेकोरेशन करते वक़्त हराम हलाल का ख़्याल रखें और नाजै़बा तसावीर घरों में न सजाऐं।

नसीहत नं. 37

घर अंदर और बाहर से कैसा हो

घर के लिए बेहतरीन मौक़ा और ठोस जगह पसंद करना चाहिए। इसमें कोई शक नहीं है कि सच्चा मुस्लिम अपने घर के इख़्तियार करने में और उसके ठोस व मज़बूत होने में चंद बातों की रिआयत करता है।

घर किस मौक़ा पर वाक़े है:

यानी यह कि घर मस्जिद के क़रीब हो क्योंकि उसके बड़े बड़े फ़ायदे हैं जो पोशीदा नहीं रह सकते क्योंकि हमेशा अज़ाना सुनाई देगी और नमाज़ के लिए जागेगा और क़रीब रहने की वजह से जमाअत को बराबर पाएगा और औरतें भी सुबह सुबह मस्जिद से अज़ान और तकबीर और कुरआन की तिलावत सुनेंगी और बच्चे भी सहूलत महसूस करेंगे ताकि कुरआन करीम के हिफ़्ज़ के लिए जा सकें।

घर की ऐसी जगह न हो या ऐसी इमारत में न हो जहाँ कुफ़्फ़ार रहते हों क्योंकि मेलजोल से मुस्लिम घराने पर वह असर और मआशरती ज़िंदगी हासिल न होगी जो मुस्लिम मोहल्ला में होगी।

बेपरदगी न हो कि अगर परदों को हटा भी दिया जाए और दीवारों पर लटका दिया जाए तो बेपरदगी न हो।

घर में यह देखे कि जब अजनबी अफ़राद आऐं तो मर्दों और औरतों के लिए अलाहेदा अलाहेदा दरवाज़ा हो, और उनके अलाहेदा बैठक ख़ाने हों और अगर यह हासिल न हो तो ऐसी जगह हो कि दोनों के बीच परदे लटका कर आड़ की जा सकती हो।

खिड़कियाँ ऐसी हों जिन पर परदे लटकाऐं जाऐं इस हैसियत से कि पड़ौसी के कमरे वग़ैरा से कोई न देख सके या आदमी की निगाह सड़क पर से न पड़े और खुसूसियत से रात में जब कि लाईटस शुरू हों और कमरा मुनव्वर हो तो बाहर से देखने वाले को अंदर के अफ़राद नज़र न आऐं।

इस बात का बहुत ज़्यादा ख़्याल रखा जाए कि बैतुल ख़लाओं

यानी हमामात में पाख़ाना वग़ैरा के लिए जो सीटें लगाई गई हैं वह किस जानिब हैं अगर बैठक का रुख़ क़िब्ला की जानिब है तो ऐसा मकान न लिया जाए या तो उसको तबदील करवा लिया जाए ताकि रफ़ा हाजत के वक़्त चहरा और कमर काबा शरीफ़ की तरफ़ न हो।

कुशादा मकान और चौड़ा मकान व घर हो क्योंकि इसकी चंद ख़ास वजहें हैं:

इसलिए कि अल्लाह तआला अपने बंदे पर अपनी नेमत का असर देखना चाहता है। (तिर्मिज़ी)

तीन अफ़राद नेक बख़्तों में से हैं और तीन अफ़राद बदबख़्तों में से हैं।

तीन नैक बख़्त

1. नैक बख़्त वह शख़्स हैं कि जब नैक बीवी को वह देखे तो उसको वह भली मालूम हो, और जब वह अपनी बीवी से ग़ायब रहे तो वह अपने नफ़्स और शौहर के माल की हिफ़ाज़त करे।
2. और तेज़ रफ़्तार सवारी जबकि तुम अपने साथियों से बिछड़ जाओ तो वह तुम को तुम्हारे दोस्तों से मिला दे।
3. घरों का कुशादा होना ताकि घर वाले सुकून व इतमिनान से रह सके।

तीन बदबख़्त

1. ऐसी औरत जब उसको देखे तो तुझे वह बुरी मालूम हो और जो अपनी ज़बान तुझ पर चलाती हो और अगर तुम उससे ग़ायब रहो तो वह अपने नफ्स की और तुम्हारे माल की हिफ़ाज़त न करे।
2. तुम्हारी ऐसी सुस्त रफ्तार सवारी कि तुम इसको मारते मारते थक जाओ और अगर तुम उसको इसके हाल पर छोड़ दो तो वह तुम को तुम्हारे साथियों से न मिलाए।
3. ऐसा तंग घर जिसमें तुम अपनी तमाम सहूलियात न पा सको। (रवाहुल हाकिम 3/262)

मकान ऐसा हो जिसमें सहत के तमाम पहलुओं पर भी ग़ौर हो

कि वह हवादार है या नहीं और सूरज की किरनें दाख़िल होती हैं या नहीं इस के अलावा तमाम मादी चीज़ों पर मुशतमिल है या नहीं और अगर हासिल नहीं हैं तो मुमकिनात में से है या नहीं।

और आज की ज़रूरतें जैसे बिजली, टेलीफ़ोन वग़ैरा से आरास्ता है या नहीं देखना चाहिए।

नसीहत नं. 38

घर से पहले पड़ौसी को पसंद करना है

यानी यह मालूम करना है कि इस मकान का पड़ौसी कैसे अख़लाक़ का मालिक है यह मसअला बहुत अहम है क्योंकि इस ज़माना में एक पड़ौसी का दूसरे पड़ौसी पर ज़बर्दस्त असर पड़ रहा है क्योंकि रिहाईश बिल्कुल क़रीब क़रीब है और लोग मकानों में और ख़ास तोर पर किराए के मकानों में बिल्कुल क़रीब क़रीब ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने चार चीज़ों के सईद होने की ख़बर दी है उनमें से इस बात का ज़िक्र किया है कि अगर पड़ौस नैक व सालेह है तो यह सआ़दत व नैक बख़्ती की अलामत है और चार बदबख़्त चीज़ों की ख़बर दी है उनमें से एक बदबख़्ती यह है कि उसे बुरा पड़ौसी मिले। (अबू नईम फ़िल हुलिया 8/388)

और इसी ख़तरे को मलहूज़ रखते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपनी दुआ में हमेशा पढ़ा करते थे:

اللهم انی اعوذبک من جار السوء فی دار المقامة فان جار البادية يتحول (حاكم ١٢٩٠)

और मुसलमानों को भी हुक्म दिया कि जिस मुक़ाम पर तुम मुक़ीम होने वाले हो उस जगह बुरे पड़ौसी से अल्लाह की पनाह चाहो।

फ़रमाया:

تعوذوا بالله من جار السوء فی دار المقام فان الجار البادی يتحول عنك

(بخاری: ۱۱۷)

जिस जगह मुक़ीम हो तुम अल्लाह की जनाब में बुरे पड़ौसी से पनाह चाहो इसलिए कि जब बुरा पड़ौसी होगा तो उसका असर औलाद और मियाँ बीवी पर भी पड़ेगा और इससे तरह तरह की तकालीफ़ का सामना करना होगा और इंसानी ज़िंदगी ख़राब हो जायगी, तबीअतों और ख़्यालात में कीना कपट, बुग़्ज़ व हसद परवान चढ़ेगा और अगर अहादीस के मुताबिक़ घर लेने से पहले पड़ौसी के हालात व एहवाल मालूम कर लिए और मालूम हुआ कि अच्छे लोग हैं तो फिर घर लेने में सुकून व तमानियत हासिल होगी और पड़ौसी का ख़ैर भी हम तक पहुंचेगा, ख़ान्दान पर भी अच्छा असर होगा।

और एक दूसरे की मुश्किलात भी बाआसानी हल कर सकें क्योंकि जब नैक पड़ौसन होगी तो अपने माल का भी अंदाज़ा न रखेगी और पड़ौसी को लेने देने में हिचकिचाएगी नहीं।

एक पड़ौसी को अपने पड़ौसी का ख़्याल रखना चाहिए और हर तरह की दिल शिकनी से दूर रहना चाहिए। कोशिश करनी चाहिए कि पड़ौसी के मिलने जुलने वालों से तअल्लुक़ात एक हद तक रहें क्योंकि बाज़ मर्तबा दूसरों की वजह से दिलों में कशीदगी पैदा हो जाती है।

नसीहत नं. 39

ज़रूरी इसलाहात का एहतमाम करना और आराम के अच्छी मिक़दार में वसाईल भी मुहय्या करना चाहिएं।

अल्लाह तआ़ला की नेमतों में से है कि उसने हमारे लिए ऐश व इशरत और उमदा ज़िंदगी गुज़ारने के बहुत से वसाइल मुहय्या कर दिए हैं और दुनियावी तर्ज़ मईशत ने अच्छी ज़िंदगी गुज़ारने का सलीक़ा बता दिया है और हर मिक़दार में फ़्रिज, ऐ.सी. और कपड़े धोने की मशीनें, पानी गर्म करने के लिए गीज़र, झाड़ने और साफ़ करने के लिए वैक्यूम वग़ैरा काफ़ी तादाद में मुहय्या हैं, अगर चाहें तो उनको हासिल करके बिला मुशक़्क़त बहुत वक़्त बचा सकते हैं और हस्ब इसतिताअ़त उम्दा से उम्दा ख़रीद सकते हैं और इस्तेमाल करके अपनी राहत और औलाद की राहत के अस्बाब मुहय्या कर सकते हैं। अगर इन अस्बाब के बिगड़ जाने यानी ख़राब होने पर उनकी इस्लाह का एहतमाम भी जल्द करे ताकि बैगमात तक्लीफ़ दह मराहिल से न गुज़रें, टाल मटोल न करें, और कीड़े मकोड़े उनमें घुस न जाऐं, घर में खाने पकाने के बर्तनों का मुहय्या करना और चूल्हों का ख़रीदना भी ज़रूरी है। जिन मुक़ामात पर लकड़ी के ज़रिये या कोयले के ज़रिये खाना पकता है उनके ख़त्म होने पर लाने की ज़रूरत है।

इसमें कोई शक नहीं कि इस क़िस्म का एहतमाम घर की सआ़दत और खुश बख़्ती की अलामत है और ख़ान्गी मुश्किलात को हल करने का तरीक़ा, अक़लमंदी जो भी होगा वह बीमारी से पहले एहतियात को तर्जीह देगा।

नसीहत नं. 40

घर के अफ़राद की सहत पर तवज्जह देना और सलामती की राह इख़्तियार करना

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का मामूल था कि जब घर का कोई फ़र्द बीमार होता तो आप उस पर मुअ़व्वज़तैन यानी सूर: फ़लक़ और सूर: नास पढ़ कर दम किया करते थे। (रवाहु मुस्लिम)

كان رسول الله ﷺ اذا مرض احد من اهل بيته تفث عليه المعوذات (مسلم)

وكان ﷺ اذا اخذ اهله الوعك (المرض) أمر بالحساء (المرقة المعروفة) فصنع، ثم أمرهم فحسوا، وكان يقول "انه ليرتق (شد) فؤاد الحزين، ويرعن فواد السقيم (يكشف عن فواد السقيم) كما تسروا حدا كن الوسخ عن وجهها (ترمذى)

और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के एहल को जब बीमारी आ घेरती तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हरीरा या पतला खाना बनाने का हुक्म देते (अरबी में हसा एक क़िस्म के खाने को कहते हैं जो आटा और पानी वग़ैरा मिला कर पतला बनाया जाता है।

लिहाज़ा हसा बनाया जाता है फिर आप उनको हुक्म देते कि घूंट घूंट पियो और आप फ़रमाया करते थे कि यह ग़िज़ा ग़मज़दा दिल को कुव्वत व ताक़त पहुंचाती है और बीमार के दिल से बीमारी को ले जाती है जैसा कि तुम औ़रतें अपने चहरे से मैल कुचैल ले जाती हो।

बाज़ सलामती व हिफ़ाज़त वाले आमाल को भी जारी करना चाहिए। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

اذا مسيتم فكفوا صبيانكم، فان الشيطان تنتشر حينئذ، فاذا ذهب

ساعة من الليل فخلوهم فغلقوا الابواب واذكروا اسم الله وخمروا آنيتكم واذكروا اسم الله، ولو ان تعرضوا عليها شيئا واطفئوا مصابيحكم (بخاری)

जब शाम होने लगे तो तुम अपने बच्चों को बाहर निकलने से रोक लिया करो इसलिए कि शयातीन उस वक़्त फैल जाते हैं पस जब रात की एक घड़ी गुज़र जाए तो उनको छोड़ दो, दरवाज़ों को अल्लाह का नाम लेकर बंद कर दिया करो और अल्लाह ही का नाम लेकर बर्तनों को भी ढांप दिया करो (ख़्वाह मामूली सी चीज़ जैसे लकड़ी वग़ैरा की आड़ से ही क्यों न हो) और अपने चिराग़ों को बुझा दिया करो।

और मुस्लिम की एक रिवायत में है:

واغلقوا ابوابكم، وخمروا آنيتكم وأطفئوا سرجكم و اوكئوا اسقيتكم (شدوا رباطها على افواهها) فان الشيطان لايفتح بابا مغلقاً ولا يكشف غطاءً ولايحل وكاءً وان الفوسيقة تضرم البيت على اهله.

यानी तुम अपने दरवाज़ों को बंद कर दिया करो और अपने बर्तनों को ढांप लिया करो, अपने चिराग़ों को बुझा दिया करो, और अपनी मश्कों को उलट दिया करो, यानी पीने के बर्तनों के मुंह सख़्ती से बंद कर दिया करो) इसलिए शैतान बंद दरवाज़ा नहीं खोल सकता है, और ढक्कन नहीं उलट सकता, और ऐसा बर्तन जिसको बांध दिया गया हो खोल नहीं सकता, अपने दिए बुझा दिया करो इसलिए कि चूहा चिराग़ की बत्ती खींच सकता है और घर वालों को जला सकता है।

नीज़ नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

لاتتركوا النار فی بیوتکم حین تنامون (بخاری: ۸۵/۱۱)

तुम लोग आग को अपने घर में जलता हुआ न छोड़ा

करो जिस वक़्त के तुम सोने जा रहे हो।

आम तोर से मस्तूरात को उन हिदायात नबवी पर तवज्जह देने की ज़रूरत है और उसके फ़वाइद भी बहुत हैं, आम तोर से देखा जाता है कि घर में जब कोई पड़ौसन औ़रतें आती हैं तो जलते हुए चूल्हे पर हांडी वग़ैरा छोड़ कर बात चीत में लग जाती हैं या पकता हुआ कोई भी सामान छोड़ कर दूसरे कामों में लग जाती हैं, उबलते हुए दूध और पकती हुई चाए के नुक़्सान के अलावा बाज़ मर्तबा जानी और माली नुक़्सान भी हो जाता है।

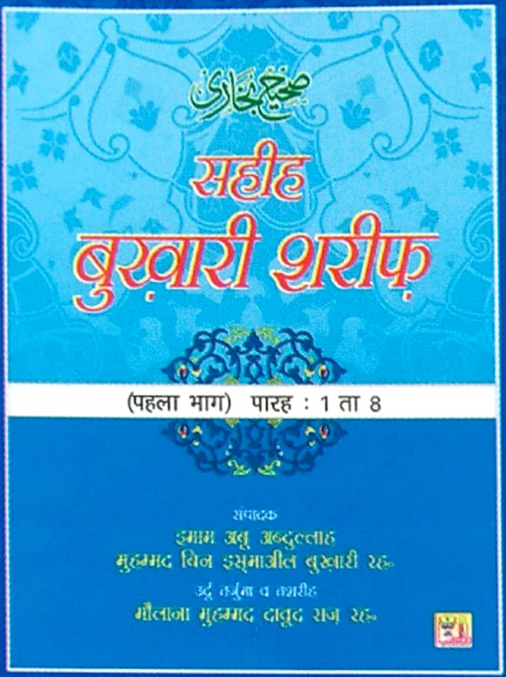
इसके अलावा देहातों में गूंधा हुआ आटा और पकाए हुए बर्तन छोड़ कर दूसरे कामों में लग जाना और घर का दरवाज़ा खुला छोड़ देना तो बाज़ मर्तबा इस क़द्र नुक़्सान दह होता है कि जानवर घरों में घुस आते हैं और नुक़्सान पहुंचाते हैं।

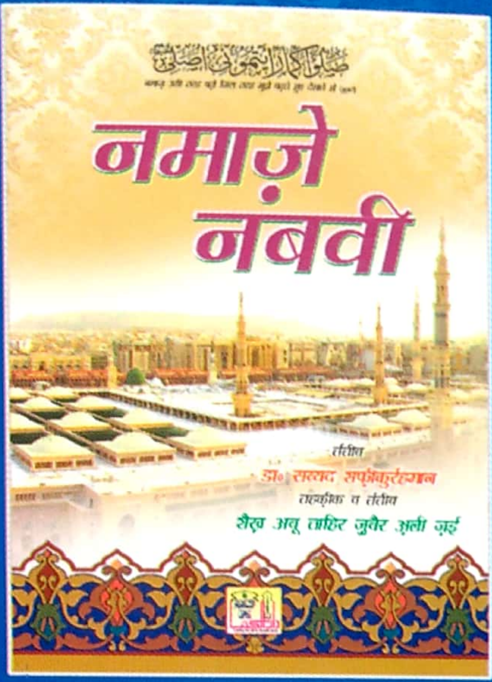
इसके अलावा और भी बहुत सी बेतवज्जही की वजूहात हैं जिनसे नुक़्सान पहुंच सकता है मसलन रात में बर्तनों के खुले छूट जाने से खाने पीने की चीज़ों में ज़हरीली चीज़ों के गिर जाने से मौत वाक़े होती हैं और पानी पीते वक़्त कीड़े मकोड़े मुंह में आ जाते हैं। जलते हुए चिराग़ों से मकानात जल कर ख़ाकस्तर हो गए हैं और कितने ही बच्चे मूज़ी जानवरों और तकलीफ़ दह शयातीन जिन्न व इन्सानों के शिकार हुए हैं, दरवाज़ों के खुले रहने से चोर उचक्के दाख़िल होकर नुक़सान का सबब बने हैं।

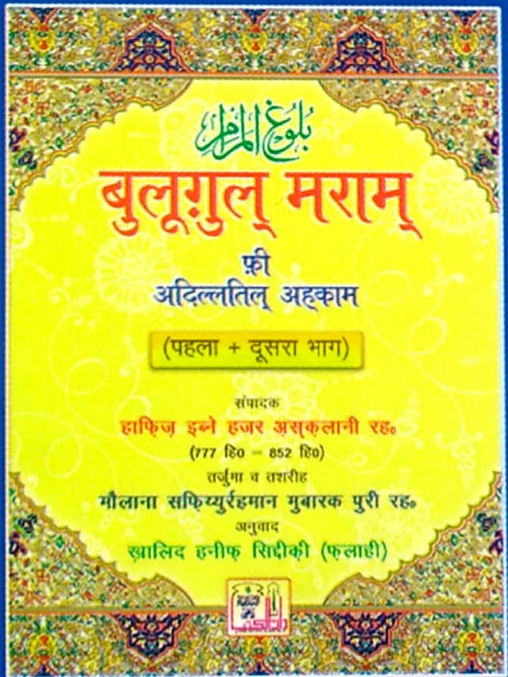
अल्लाह के रसूल की हर हदीस और हर हिदायत लायक़ एहतराम व अमल है घर के हर फ़र्द को उसको मामूली तसव्वुर नहीं करना चाहिए।

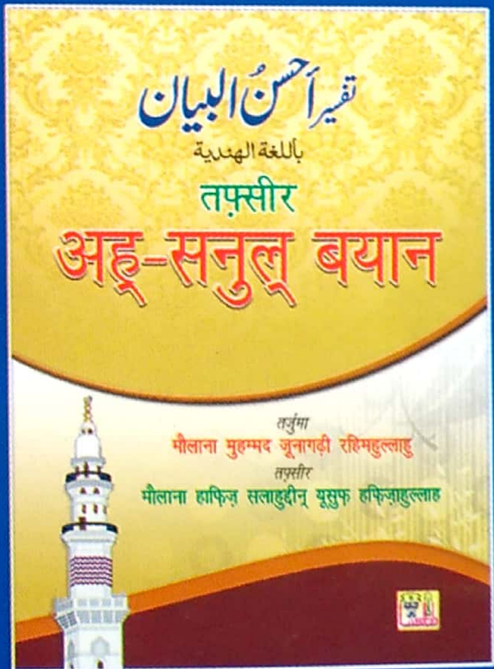
बल्कि अज़ीम समझ कर अमल पैरा होना चाहिए।

☆☆☆









Future Graphics 0-9213980444

Scanned by CamScanner